SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दक्षिण वाणी

वार्षिक गृह पत्रिका

वर्ष-2024

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय,

चेन्नै- 600 034

हिन्दी पखवाड़ा 2024, के समापन समारोह में प्रधान निदेशक द्वारा पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

"कार्यालय की ई-पत्रिका "दक्षिण वाणी" 2024 - प्रथम संस्करण का प्रधान निदेशक के करकमलों द्वारा विमोचन"

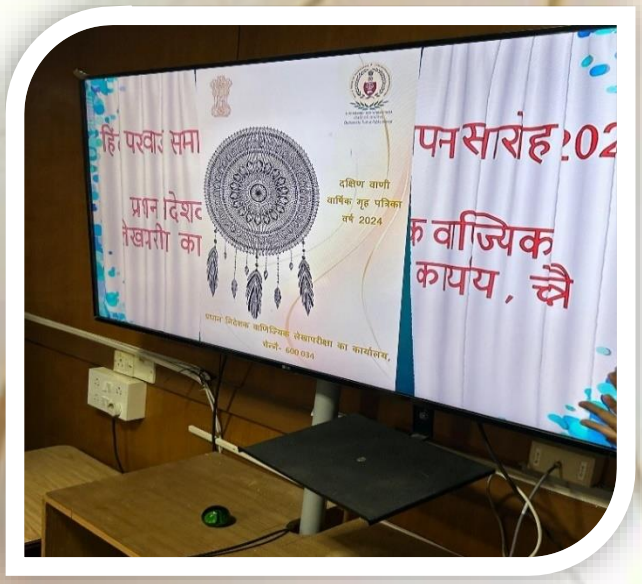

अनुक्रमणिका

क्रम सं	विषय	रचनाकार (श्री, सुश्री, श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का संदेश	--	5
2	उप निदेशक/प्रशासन का संदेश	--	6
3	उप निदेशक/वा.लेप. का संदेश	--	7
4	संपादकीय	--	8
5	भारतीय संस्कृति	गुलशन कुमार	10
6	स्वस्थ जीवन	रश्मि गंगवानी	11
7	मंडला आर्ट	अरुण विकास	13
8	"माँ" मेरी माँ	ओम प्रकाश मीना	15
9	मेरा पहला लेखापरीक्षा अनुभव	अरुण जॉर्ज जोसेफ	16
10	मेरा दूसरा गृहनगर	दीपक कुमार	19
11	दक्षिण के मुरुगन और उत्तर के कार्तिक	सिमी के एस	20
12	कुछ विवाह ऐसे भी	पूजा साहू	22
13	दीपावली (कविता)	अरुण विकास	23
14	मूर्ख बंदर	रोहिणि प्रिया	24
15	अशोक महान: युद्ध से बुद्ध तक	अखिलेश	25
16	कुन्नूर के चाय बागान में एक आधिकारिक दैरा	आशिष कुमार साव	26
17	अनकही (कविता)	अखिलेश	27
18	एक जादूगर और उसकी जादुई गुफा	एन.नलिनी	28
19	कहाँ रह गए तुम (कविता)	नवीन कुमार 'पटनी'	30
20	मुक्तिनाथ मंदिर, नेपाल की मेरी यात्रा	एन.श्यामला	31
21	प्रेम (कविता)	अरुण विकास	33
22	मैंने कैसे खाना बनाना शुरु किया	राहुल मौर्य	34
23	एक मुलाकात (कविता)	अरुण विकास	36
24	आधुनिक जीवन में योगा की आवश्यकता	सिमी के एस	37
25	बाल कविता 'बारिश' (कविता)	रोहित मिश्रा	39
26	पेंटिग	--	40
27	एक पत्र बिस्तर के नाम	नवीन कुमार 'पटनी'	41
28	वेम्बुलि अम्मन तिरुविषा	एन.नलिनी	43
29	एक शुरुआत : मेरे पहले सफर की ओर	उपासना साहू	44
30	पकड़ौआ विवाह	गुलशन कुमार	46

आवरण:- ***मुख पृष्ठ - मंडला आर्ट, सुश्री रश्मि गंगवानी, लेखापरीक्षक***
अंतिम पृष्ठ - श्री अखिलेश, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए ।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए ।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
- अभ्यास अविलम्ब आरंभ कीजिए ।

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय

इंडियन ऑयल भवन, स्तर -2 , 139, महात्मा गाँधी मार्ग, चेन्नै - 600034

दक्षिण वाणी

वार्षिक गृह पत्रिका

प्रथम अंक, वर्ष-2024

संरक्षक

श्री एस. वेल्लियंगिरी

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

उपसंरक्षक

श्री पी. असोकन

उप निदेशक/प्रशासन

श्री आर. पी. जॉर्ज

उप निदेशक/वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

श्रीमती डी.आर.सुधा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

संपादक मंडल

श्रीमती के एस सिमी

हिन्दी अधिकारी

श्री अरुण विकास

वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री पूजा साहू

कनिष्ठ अनुवादक

संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं।

संदेश

मुझे अपने कार्यालय की प्रथम हिंदी वार्षिक पत्रिका "दक्षिण वाणी" के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हिंदी हमारी राजभाषा है तथा यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में अपना योगदान दें। हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए कि कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें तथा कार्यालय का अधिकांश कार्य हिंदी में किया जाए।

मैं इस पत्रिका से जुड़े रचनाकारों के योगदान की सराहना करता हूं। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा के विकास में अपना योगदान देगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

आरंभ की अपनी एक सुंदरता होती है, आरंभ गतिमान रहने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हमारा कार्यालय इस बार अपनी हिंदी गृह पत्रिका **"दक्षिण वाणी"** के प्रथम अंक का प्रकाशन करते हुए आरंभ की अनंत गति पर विराजमान होकर अग्रसर होने जा रही है। यह अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का माहौल तैयार होता है। हम सभी संवैधानिक दायित्वों से जुड़े हुए हैं। राजभाषा संबंधी अधिनियमों/नियमों का अनुपालन करते हुए राजभाषा द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों/निर्देशों का पालन करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

इसी कड़ी में हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने जा रही हिंदी गृह पत्रिका **"दक्षिण वाणी"** के प्रकाशन पर मुझे खुशी है। मैं विशेष रूप से संपादक मंडल का तथा उन सभी रचनाकारों को साधुवाद देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं आदि के माध्यम से इस पत्रिका के प्रकाशन में अहम भूमिका निभाई है।

उप निदेशक/प्रशासन

केंद्रीय कार्यालयों में विशेष कर अहिंदी क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी को सहृदयता से स्वीकारना और इसे सीखने की ललक देखकर प्रसन्नता होती है। इसमें कोई दो राय नहीं की हिंदी बहुजन में बोले जाने वाली भाषा है।

हम भारत के अधिकतर लोगों तक हिंदी भाषा के माध्यम से अपनी बात पहुंचा सकते हैं। इस मामले में व्यापारिक दृष्टिकोण से हिंदी भाषा की अपनी महता है। दक्षिण के राज्यों में स्वतंत्रता काल के पहले स्थापित "दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा" का हिंदी के प्रचार प्रसार में काफी योगदान रहा है। आज का युवा वर्ग इस भाषा को सीखना चाहता है।

हिंदी भाषा अपने आप में समग्रता को समेटे हुए विशिष्टता का आभास दिलाती है। मुझे इस बात की खुशी है कि हमारा कार्यालय अपने गृह पत्रिका "दक्षिण वाणी" के प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रही है जो स्वयं में अपनी रचनाओं के माध्यम से विविधता को समेटे हुई है। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

उप निदेशक/वा.लेप.

संपादक की कलम से

"दक्षिण वाणी" वार्षिक गृह पत्रिका अपने आप में ही एक गूँज है, जो वाणिज्यिक लेखापरीक्षा कार्यालय के पदधारियों के अनमोल कला एवं कल्पना से निखर आयी है । हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार रचनाकार ही है। उन्हें अपने रचनात्मकता को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करने के लिए सिर्फ एक मंच की जरूरत है। इस पत्रिका के माध्यम से पदधारियों को अपने रचनात्मक कौशल को उजागर करने की प्रेरणा मिली है।

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, और यही इसकी विशेषता भी है। केन्द्रीय सरकारी कार्यालय विशेषकर चेन्नै में स्थित कार्यालयों में हमें भारत के विविध भाषा-भाषी पदधारियों के साथ काम करने का अवसर मिलता है। ऐसे में पत्रिका के माध्यम से एक स्थान पर सभी को एक सूत्र में पिरोना खुशी की बात है।

"दक्षिण वाणी" पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ विभागीय अभिसंपत्तियों और उपलब्धियों को पर्याप्त स्थान देते हुए पत्रिका प्रकाशन की गौरवमयी परंपरा को सतत् बनाए रखने का प्रयास किया है। उन सभी पदधारियों के प्रयासों की प्रशंसा करते हैं जिन्होंने अपने भावों को कलमबद्ध करके अपनी रचना, पत्रिका में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत किए। पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

हिन्दी अनुभाग

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से ; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से ; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे ; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए ; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा। जय हिंदी।

गुलशन कुमार
आशुलिपिक ग्रे.I

भारतीय संस्कृति

भारत आज एक बहुसांस्कृतिक समाज के रूप में जाना जाता है, जहाँ अलग-अलग धर्मों, परंपराओं , और रीति-रिवाजों का पालन वर्षों से किया जा रहा है। इसकी संस्कृति जीवंत, समृद्ध और विविधतापूर्ण है। भारत पर कई आक्रमण हुए, जिससे मौजूदा संस्कृति में वृद्धि हुई है। इसने कई संस्कृतियों पर आघात किया है और आगे बढ़ा है। यहाँ लगभग सभी लोग अपने-अपने धर्मों में गहरी आस्था रखते हैं। धर्म भारतीय संस्कृति के हर कोने के साथ-साथ आम लोगों की आत्मा में भी व्याप्त है, जिससे भारतीय समाज राजनीति, अर्थव्यवस्था, कला क्षेत्र और साहित्य सहित बहुत-सी चीजों के बीच मजबूत और गहरे संबंध बनते है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा भारतीय संस्कृति की सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक हैं। इसका अर्थ "सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है "। परिवार के सदस्यों के बीच किसी भी प्रकार का वैमनस्य या लड़ाई-झगड़ा नहीं होना चाहिए। हर किसी को शांति और सद्भावना से जीवनयापन करना चाहिए।

भारत की विभिन्न स्थानीय संस्कृतियों, भाषाई संस्कृतियों और धार्मिक संस्कृतियों में भी प्रत्येक में विदेशी संस्कृतियों से प्राप्त घटको की एक शृंखला शामिल हैं। अंग्रेजी का हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं पर प्रभाव पड़ा है। भारत समृद्ध संस्कृति और विरासत की भूमि है। प्राचीन मंदिरों और स्मारकों से लेकर सुंदर कला और वास्तुकला तक भारत में देखने को मिलते हैं। भोजन में भी विविधता है। प्रत्येक क्षेत्र का अपना अनूठा व्यंजन हैं। भारतीय संस्कृति निश्चित रूप से प्राचीन होने के साथ-साथ लचीला भी है लेकिन फिर भी आज की पीढ़ी अपनी संस्कृति को भूलकर अंग्रेजों द्वारा फैलाई गई पश्चिमी सभ्यता का पालन कर रही है जो की बहुत ही चिंताजनक है। भारतीय संस्कृति का उद्देश्य सद्भाव और व्यवस्था विकसित करना हैं।

सुश्री रश्मि गंगवानी
लेखापरीक्षक

स्वस्थ जीवन

"स्वस्थ' रहना ही असली संपत्ती है, न कि सोना और चांदी" – महात्मा गांधी

'जान है तो जहान है' ऐसे अन्य कई बातें हमने सुनी पर इन बातों पर कितना अमल किया है यह विचार करने का विषय है।

इस तेजी से आगे बढ़ते जीवन में व्यक्ति इतना व्यस्त हो गया है कि अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना ही भूलता जा रहा है। धन अर्जित करना, कैरियर में प्रगति करना, परिवार व समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ निभाना इन सब का बोझ लिए सभी जीवन व्यतीत कर रहे हैं पर ये नहीं समझ पाते कि व्यक्ति स्वयं अगर स्वस्थ रहेगा तो और बेहतर तरीके से सारी जिम्मेदारियाँ निभा सकेगा।

एक साक्षात्कार में श्री नारायण मूर्ती जी से पूछा गया था कि आपके जीवन में ऐसी कौन सी चीज है जिसपर आपको लगता है कि भूतकाल में आपको उस पर ध्यान देना चाहिए या जिससे आपके व्यवसाय में और अधिक लाभ होता ? श्री नारायण मूर्ती जी का इस पर जवाब था '**अपने स्वास्थ्य पर**' । आज मैं ओर अधिक परिश्रम कर पाता, क्षमता से कार्य कर पाता अगर मैंने स्वास्थ्य को नज़रअंदाज़ न किया होता तो ।

स्वस्थ रहने के लिए किसी खास उपाय की आवश्यकता नहीं है, जरूरत है तो बस दो क्षेत्रों में कार्य करने की। पहली अपनी जीवन शैली को सुधारना और दूसरी उसे सुधारने की स्वयं की दृढ़ इच्छा शक्ति।

स्वस्थ शरीर के लिए तीनों आयाम पर काम करना अति आवश्यक है। भोजन (खान-पान), व्यायाम एवं नींद।

संतुलित भोजन का अर्थ सिर्फ पेट भरना ही नहीं होता अपितु सही खाना खाना, सही तरीके से खाना व सही समय पर खाना ये तीनों बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है। सही खाना खाने से मतलब है प्रकृति जिस स्वरूप में हमें उत्पाद प्रदान करती है कोशिश करें अधिक से अधिक उसी स्वरुप में उसका सेवन करें। प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ का सेवन न करें या कम से

कम करें। उसका उपयोग करने से पूर्व उसमें उपलब्ध सामग्री को अवश्य पढ़े। ऐसी सामग्री जिनका नाम आपने न सुना हो या उसका उच्चारण करने में आपको तकलीफ हो जैसे उत्पादों का सेवन न करें। सही तरीके से खाने का अर्थ है कम तेल, कम मिर्च-मसाले वाले भोजन खाना। जिस भोजन को पकाने में अधिक समय लगता है उनका सेवन कम करें।

सबसे महत्वपूर्ण बात है सही समय पर खाना अपनी "ईटिंग विंडो" को सूर्य के उदय व अस्त होने के अनुसार करने पर अधिक लाभ मिलता है। शरीर की पाचन शक्ति (जठर अग्नि) सूर्य के गति के अनुसार कार्य करती है। जितना कम समय शरीर भोजन पचाने में व्यक्त करेगा उतना अधिक समय शरीर अपनी उपचारात्मक शक्ति (हीलिंग पावर) पर केंद्रित कर पाएगा।

व्यायाम से तात्पर्य है अधिक से अधिक शारीरिक हलचल। मशीनीकरण के इस दौर में शारीरिक क्रियाओं पर प्रभाव ज़रूर पड़ा है पर छोटे-छोटे तरीकों से इसे सुधारा जा सकता है। सीटिंग जॉब में सुनिश्चित करें कि अधिक से अधिक एक घंटे के उपरांत एक बार थोड़ा चल लें, एक या दो माले चढ़ने के लिए लिफ्ट या एस्कलेटर के बजाए सीढ़ियों का उपयोग करें। योग, प्राणायाम, वॉक, जॉग आदि को अपनी जीवन शैली का भाग बनाए।

तीसरा सबसे महत्वपूर्ण घटक है अच्छी नींद। 'अच्छी नींद' आप कितने घंटे सोए उससे सुनिश्चित नहीं होता अपितु किस समय सोए उससे होता है। जल्दी सोए जल्दी जागे (Early to bed early to rise) यह बात बचपन से सुनते आ रहे हैं। जरूरत है कि इस पर अमल करें। रात्रि 10 बजे से मध्य रात्रि 2 बजे के अंतराल की नींद में ही आपका दिमाग व शरीर अच्छे से आराम कर पाता है बाकि समय की नींद में आपका शरीर तो आराम कर रहा होता है पर आपका दिमाग नहीं जो सोते हुए भी चलता रहता है। स्वस्थ शरीर के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का ठीक रहना जितना महत्वपूर्ण है उतना ही मानसिक स्वास्थ्य का भी।

स्वस्थ रहने के लिए प्रेरणा [Motivation] की आवश्यकता नहीं बल्कि अपने आस-पास के वातावरण को सुधारने की ज़रूरत है। मनुष्य जिन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए इतनी मेहनत करता है ऐशों आराम भरा जीवन जीने के लिए इतना कार्य करता है, पर यह भूल जाता है कि इन सबका क्या फायदा अगर इनका उपयोग करने के लिए व्यक्ति स्वयं ही न रहे तो ?

आपकी अच्छी सेहत, आपकी सबसे बड़ी दौलत है।

श्री अरुण विकास
वरिष्ठ अनुवादक

मंडला आर्ट

मंडला आर्ट कला का एक गोलाकार रूप है। इसे आर्ट और सर्किल भी कहा जाता है। मंडला संस्कृत से लिया गया शब्द है जिसका अर्थ है चक्र। यह एक डिजाइन या पैटर्न है जिसका इतिहास बौद्ध और हिंदू धर्म के आध्यात्मिकता से जुड़ा है।

सुश्री रश्मि गंगवानी की कृति

मंडल अपने आदर्श रूप में ब्रह्मांड का प्रतीक है, जो पीड़ा को आनंद में बदलता है। इसका उपयोग ध्यान में सहायता के रूप में भी किया जा सकता है, जिससे ध्यान करने वाले को यह कल्पना करने में मदद मिलती है कि पूर्ण आत्म को कैसे प्राप्त किया जाए।

मंडला पहली बार ईसा पूर्व पहली शताब्दी में भारत में दिखाई दिया जो बौद्ध कला के माध्यम से खुद को प्रस्तुत करता है। अगली कुछ शताब्दियों में, बौद्ध धर्म प्रचारकों ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ मंडला आर्ट के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंडला आर्ट में एक केंद्र बिंदु होता है, जिसमें से प्रतीकों, आकृतियों और रूपों की एक सारणी निकलती है। इस डिजाइन में आमतौर पर कई परतें होती हैं और इसे रंगों से रंगा जाता है। मंडला आर्ट आकार और प्रकृति के संदर्भ में विकसित हुआ है। मंडला आर्ट बनाते समय बारीक पैटर्न को समरूपता में बनाया जाता है। मंडला आर्ट में सबसे महत्वपूर्ण है कि हर पैटर्न अंत में एक विशाल चक्र या किसी दुसरे आकार का हिस्सा बनता है, जिसका मुख्य उद्देश्य इसके निर्माता को उनके वास्तविक स्वरूप की खोज में सहायता करना है। हिंदू धर्म में, एक मंडल या यंत्र एक वर्ग के आकार में होता है जिसके केंद्र में एक चक्र होता है।

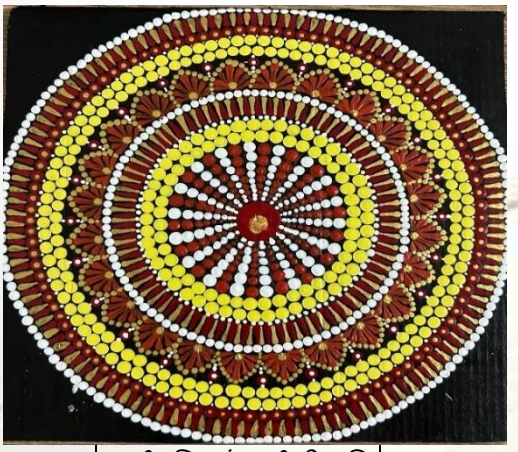

सुश्री रश्मि गंगवानी की कृति

मंडल के भीतर विभिन्न तत्व शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना अर्थ है। उदाहरण के लिए, चक्र की आठ तीलियाँ (धर्मचक्र) बौद्ध धर्म के अष्टांग मार्ग (ऐसे अभ्यास जो पुनर्जन्म से मुक्ति दिलाते हैं) का प्रतिनिधित्व करती हैं, कमल का फूल संतुलन को दर्शाता है, और सूर्य ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करता है.ऊपर की ओर, त्रिकोण क्रिया और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं, और नीचे की ओर, रचनात्मकता और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रतिभाशाली मनोविश्लेषक कार्ल जंग का मानना था कि मंडल स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है और मंडल का चित्रण व्यक्ति को उस स्वयं से मिलने के लिए एक पवित्र स्थान देता है। उन्होंने मंडलों को कला चिकित्सा का एक प्रभावी रूप बनाने पर विचार किया, जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे लोगों को शांत और आराम देने में मदद करता है। कुल पाँच प्रकार के मंडल होते हैं, ज्यामितीय मंडल, वास्तु मंडल, तत्व मंडल, पुष्प मंडल और अक्षर मंडल।

मंडला आर्ट बनाते समय बारीक पैटर्न को समरूपता में बनाया जाता है। जिनमें आम तौर पर एक केंद्र बिंदु होता है | यही एक मंडला आर्ट की सबसे बड़ी पहचान है। एक मंडला को आम तौर पर उसके समरूपी पैटर्न और सिमिट्री से पहचाना जा सकता है। जिसमें केंद्र से निकलने वाले रंग, आकार और पैटर्न होते हैं। लेकिन हर मंडल गोलाकार हो ज़रूरी नहीं है ।किसी भी आकार में पैटर्न में मंडला बना सकते हैं, किसी भी रंग का उपयोग कर सकते हैं। बस एक कागज़ और कलम के साथ भी मंडला बनाना शुरू कर सकते हैं।

सुश्री रश्मि गंगवानी की कृति

इसे बनाने में रेत, रंग, फूल एवं प्राकृतिक चीज़ों का प्रयोग किया जा सकता है । विद्वानों के अनुसार भारतीय लोक कला में मंडला आर्ट रंगोली का ही एक रूप है । इसे बनाने से शांति की अनुभूति होने के साथ कौशल में सुधार होता है । धैर्य एवं एकाग्रता का विकास होता है ।

इन जटिल वृत्तों के पीछे छुपी ध्यानपूर्ण और प्रतीकात्मक अर्थ गहरा है और इसकी दृश्य उपस्थिति से कहीं आगे तक जाता है।

कला वह है जो हमें अलगाव से मुक्ति दिलाती है,
और हमें मानवता के साथ जोड़ती है।

श्री ओम प्रकाश मीना
लेखापरीक्षक

"माँ" मेरी माँ

खुसनसिब हूं मैं, शुक्रगुजार हूं मैं,
उस मां का जिसने मुझको जन्म दिया।
नादान था मैं समझ से परे था मैं,
जिसको उन्होंने समाज का पाठ सिखाया।।

बचपन बीता था जिनकी गोद में,
जिनका मुझ पर बरसता था लाड़-दुलार।
खुदा को शायद मंजूर नहीं था मुझपर,
बेवजह मेरी मां का असीम प्यार।

जिसकी छांव में गुजरा था मेरा एक-एक पल,
आज उसी ने मुझे रुला दिया।
ना जाने किसकी लगी बददुआ उनको,
जो दुनिया से अलविदा कह के सिला दिया।।

समुद्र जैसे विशाल हृदय में अपनों के प्रति था प्यार
अपार, जो सहारा था टूटकर बिखर गया सअसर।
ना स्वार्थ था उनके मन में, ना ही कोई जिज्ञासा थी,
बस सदा अपने पास रखने की अभिलाषा थी।।

सोचा नहीं था कभी कि
मंजिल की फिराक में,
फिर से जीवन में वक्त का तकाज़ा होगा।
तकदीर के मंसूबों ने कुछ और ही लिखा, 'बदनसीब'
मेरी ही मां का जनाज़ा होगा।।

जब परलोक सिधार गई, एक पल के लिए
सन्नाटा सा छा गया।
मानो की पैरों के नीचे से
जमीं खिसक के वीरान सा हो गया।

कुछ समय के लिए लगा की,
लानत है ए नौकरी तुझ पर।
जिसकी देह विलीन में भी शरीक नहीं हो सका,
जो जान छिड़कती थी मुझ पर।

कुछ जिम्मेदारियां थी, कुछ नुस्खे थे
और कुछ अपनों का भार।
अधूरी सी रह गई ख्वाहिशें, टूट गई उम्मीदें।
मिट्टी में तब्दील हो गए इरादें बारम्बार।

आज भी याद करता हूं तो एक पल के लिए
रोना आ जाता है।
आंसू से निकल आते हैं, फिर से
मां का डांट कर खाना खिलाना याद आ जाता हैं।
सोचता हूं फिर से लौट आ मां,
ताकि जिदंगी की ढेर सारी शिकायतें करूं।
कोई इबादत ना हो, कोई आलम ना हो,
हौंसला अफजाई करता फिरूं।

"शिकायतें थी, शिकवे थे, कुछ गीले थे अपने।
नामंजूर हैं, ना पूरे हैं जिंदगी के अधूरे सपने।
क्या कहूं, कैसे कहूं, किसी और से उलाहने अपने।
शायद किस्मत को भी रास नहीं हैं,
मेरे रात - दिन के सपने।।"

"माँ, बच्चे की पहली शिक्षिका और मार्गदर्शक होती हैं।"

श्री अरुण जॉर्ज जोसेफ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा पहला लेखापरीक्षा अनुभव

मैं इस कार्यालय में वर्ष 2010 को कार्यभार ग्रहण करने के उपरांत वर्ष 2012 में अपनी परिवीक्षा अवधि पूरी कर लिया था। मुझे एक अनुभवी और मृदुभाषी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के अधीन काम करने का अवसर प्राप्त हुआ जो हर समय कहते थे "जब भी लेखापरीक्षा करने के लिए अलग-अलग कार्यालय में जाते है तो ध्यान से उनकी बातें सुनना चाहिए, क्योंकि उनके मुँह से निकलने वाली हर एक शब्द में लेखापरीक्षा के पैरा छुपे होते हैं"। वह मुझसे यह भी कहते थे कि लेखापरीक्षा रिपोर्ट में शामिल किए जाने वाले मुद्दों की पहचान करने के लिए आपको केवल "फाइलों को ही नहीं बल्कि अपने आस-पास की हर चीज पर नज़र रखने की जरूरत है"। मेरा पहला लेखापरीक्षा तेल क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों से जुड़ी थी। किसी भी लेखापरीक्षा में पहले कुछ दिन रिकार्ड समेटने और मांगी गई रिकार्डों के इंतजार में गुजर जाता था। उन दिनों, कार्यालयों के कंप्यूटरों में इंटरनेट कनेक्शन नहीं था और स्मार्ट फोन का उपयोग केवल शुरु ही हुआ था। इस प्रकार, किसी को भी खाली समय में इंटरनेट ब्राउज़ करने या रील देखने का अवसर प्रदान नहीं हुआ। मैं हमारे लेखापरीक्षा कक्ष की कांच की खिड़की के पास खड़ा था जो इमारत की सातवीं मंजिल पर थी और नीचे देखते हुए समय बित रहा था। मेरी नजर वहां एक कोने में पडी हुई कुछ पुरानी धूल भरी फाइलों में जा फंसी। उसमें से एक फाइल उठाकर हर पन्ने पलटकर गौर से पढ़ने लगा, एक फैक्टरी में संविदा के आधार पर नियुक्त सेक्युरटी स्टाफ के लिए वेतन की मांग की टिप्पणी दिखी, उस कार्यालय के बारे में न कोई जानकारी थी न ही कही उसका ज़िक्र किया गया था। मैंने उसी बिंदु में से अपना जांच करना शुरू किया । अंत में पता चला कि इसी फैक्टरी में 83 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है, इसी कारण फैक्ट्री बंद हो गई थी। यहीं पर मेरा पहला लेखापरीक्षा पैरा का जन्म हुआ । सहकर्मी मुझे बधाई देने लगे, इस खुशी का कारण मेरे वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी ही थे जिन्होंने कहा था कि "फाइलों को ही नहीं बल्कि अपने आस-पास की हर चीज पर नज़र रखने की जरूरत है।"

मुश्किल काम भी आसान हो जाते हैं, जब हम मुश्किल से ज्यादा
मेहनत पर ध्यान देने लगते हैं।

राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिन्दी में करें
- फाइलों पर विषय अनिवार्य रूप से हिन्दी या द्विभाषी में लिखे।
- कंप्यूटर में यूनिकोड /देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिन्दी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिन्दी में दें।
- सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड, रबर के मोहरें द्विभाषी में उपयोग करें।
- मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिन्दी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- हिन्दी न जाननेवालों को हिन्दी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी की जानेवाले कागजातों की सूची	
1.सामान्य आदेश (General orders)	8. प्रेस विज्ञप्तियां (Press Communiques)
2. परिपत्र (Circulars)	9. संविदाएं (Contracts)
3. संकल्प (Resolutions)	10. करार (Agreements)
4. नियम (Rules)	11. अनुज्ञप्तियां (Licenses)
5. ज्ञापन (Memorandum)	12. अनुज्ञा पत्र (Permits)
6. अधिसूचनाएं (Notifications)	13. निविदा सूचना तथा निविदा प्रारूप (Tender Notices & Forms of Tender)
7. प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन (Administrative & Other Reports)	14. संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र (Reports and Documents to be laid before the Parliament)

अष्टम अनुसूची में शामिल भाषाएं			
1. असमिया	7. तमिल	13. संस्कृत	19. मैथिली
2. उड़िया	8. तेलुगु	14. सिंधी	20. संथाली
3. उर्दु	9. पंजाबी	15. हिन्दी	21. बोडो
4. कन्नड़	10. बंगला	16. मणिपुरी	22. डोगरी
5. कश्मीरी	11. मराठी	17. नेपाली	
6. गुजराती	12. मलयालम	18. कोंकणी	

हिन्दी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सितंबर 14-15		
वर्ष	सम्मेलन	स्थल
2021	प्रथम सम्मेलन	वारणसी, उत्तर प्रदेश
2022	द्वितीय सम्मेलन	सूरत, गुजरात
2023	तृतीय सम्मेलन	पुणे, महाराष्ट्र
2024	चतुर्थ सम्मेलन	नई दिल्ली

दिन प्रतिदिन कार्यालयीन कार्य में प्रचलित शब्द	
अग्रेषण पत्र	Forwarding letter
संलग्न/अनुलग्नक	Enclosure/ Annexure
प्रशासन अनुभाग	Administration section
नियुक्ति/प्रतिनियुक्ति	Appointment/Deputation
अनुवर्ती कार्रवाई	Follow-up-action
पदोन्नती/सेवानिवृत्ती/अधिवर्षिता	Promotion/Retirement/Superannuation
वेतन पर्ची/मान/स्तर	Pay slip/scale/level
तैनाती/स्थानांतरण	Posting/Transfer
परिपत्र/कार्यालय आदेश/ज्ञापन	Circular/Office order/Memorandum
सम्मेलन कक्ष/बैठक/कार्यसूची/कार्यवृत्त	Conference hall/meeting/agenda/Minutes

श्री दीपक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा दूसरा गृहनगर

हमारा जीवन कई चरणों से होकर गुजरता है। शुरुआती चरण में, हम स्कूल जाते हैं और दोस्त बनाते हैं। स्कूल से लौटने के बाद हम अपने पड़ोसियों के साथ खेलते हैं। हम अपने बचपन के दोस्तों के साथ मजबूत बंधन बनाते हैं और इसी तरह, हम अपने स्कूल के दिनों का आनंद लेते हैं। फिर कॉलेज चरण आता है। हम नए दोस्त बनाते हैं, हम पढ़ते हैं, खेलते हैं, इधर-उधर घूमते हैं और अंततः अपना कॉलेज पूरा करते हैं। इतने साल बिताने के बाद कोई भी अपना गृहनगर नहीं छोड़ना चाहता। लेकिन, कॉलेज लाइफ के बाद हमें जिंदगी का एक नया चरण शुरू करना है, यानी नौकरी पाना है। कुछ लोग भाग्यशाली होते हैं जिन्हें अपने गृहनगर के पास नौकरी मिल जाती है लेकिन सभी को नहीं।

मेरी जिंदगी भी कुछ ऐसे ही आगे बढ़ी। कॉलेज लाइफ के बाद मैंने भी नौकरी के लिए प्रयास किया और नौकरी मिल गयी। मेरी पोस्टिंग चेन्नै में हो गई। मुझे अपने परिवार और दोस्तों को गृहनगर में छोड़ने का थोड़ा बुरा लगा, लेकिन कोई अन्य विकल्प नहीं था। मैं अंततः अपने गृहनगर से चेन्नै चला आया।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। मैं नये मित्रों और सहकर्मियों से मिला। कुछ मेरे गृह राज्य या आसपास के थे। फिर मैंने चेन्नै से नए दोस्त बनाए। यहां चेन्नै में लगभग 8 साल गुजारने के बाद अब मुझे यहां अपने घर जैसा महसूस होता है। हम सभी साथ समय बिताते हैं। हम त्योहार मनाते हैं, बाहर जाते हैं, अपनी समस्याएं साझा करते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं। चेन्नई मेरा दूसरा गृहनगर बन गया है। मैं जानता हूं कि भविष्य में मुझे अपने गृहनगर जाने का मौका मिल सकता है, लेकिन यह शहर मेरे दूसरे घर के रूप में हमेशा मेरे दिल में रहेगा।

आपका गृहनगर आपके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि है।
- रेबेका मैकनट

श्रीमती सिमी के एस
हिन्दी अधिकारी

दक्षिण के मुरुगन और उत्तर के कार्तिक

दक्षिण भारत के तमिल नाडु में भगवान कार्तिक (मुरुगा) के छह निवास (अरुपड़ई वीडु) है। छह निवास से संबंधित विवरण तमिल के संगम साहित्य में कहा गया है। छह निवास जैसे तिरुप्रंकुन्ड्रम, तिरुचन्दूर, पलनी, स्वामिमलै, तिरुत्तणी और पषमुदिरचोलै है। तिरुप्रंकुन्ड्रम को छह धामों में से पहला माना जाता है। यह एकमात्र मंदिर है जहां भगवान मुरुगन के नही बल्कि वेल का अभिषेक किया जाता है। पलनी को भगवान मुरुगा का सबसे प्रमुख निवास स्थान माना जाता है।

तिरुचंदुर सूरसम्हारम मंदिर को दूसरे आरुपड़ई वीडु के रूप में जाना जाता है। भगवान मुरुगा ने असुर, सूरपद्मन से युद्ध में जीता और इस पवित्र स्थान पर भगवान शिव की पूजा की। यह मंदिर बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित है। सात दिवसीय कंत षष्ठी उत्सव सितंबर अंत में या नवंबर पहली सप्ताह को तिरुचंदुर मुरुगन मंदिर में पारंपरिक उत्साह और उल्लास के साथ शुरू होता है। उस समय कंत षष्ठी कवच श्लोक का गायन छह दिन होता है। सूरसम्हारम (बुराई पर अच्छाई की जीत) के अवसर पर राज्य के विभिन्न हिस्सों से हजारों भक्त सुबह से ही तिरुचंदूर के सुब्रमण्यम स्वामी मंदिर में एकत्र होकर विशेष प्रार्थनाएं करते हैं।

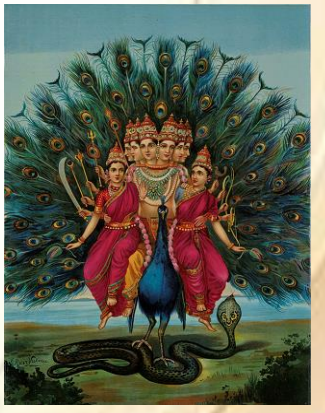

हिंदू साहित्य के अनुसार उनके 108 नाम हैं, इनमें से सबसे विशिष्ट हैं, **स्कंद** (स्कंद माने, "छलांग लगाना या हमला करना"), मुरुगन (सुंदर), कुमार (युवा), सुब्रह्मण्य (पारदर्शी), सेंथिल (विजयी), वेलांक (वेल का क्षेत्ररक्षक), स्वामीनाथ (शासक, देवताओं में से), सरवणभव (नरकटों के बीच पैदा हुआ), आरुमुख या षणमुख (छह मुख वाला), धन्ड़पानी (गदा धारण करने वाला) और कंध (बादल)। स्कन्द पुराण में कार्तिक से जुड़े कहानियां मिलते हैं।

कहते हैं असुर सूरपद्मन और तारकासुर के देवताओं पर बहुत अत्याचार करने पर देवताओं ने भगवान विष्णु और ब्रह्मा से मन्नत मांगने के पश्चात् शिव और पार्वती ने कार्तिक को जन्म दिया । कहा जाता है कि अग्नी और गंगा नदी का भी उनके जन्म में महत्वपूर्ण स्थान है। कार्तिक को प्रेम और युद्ध के देवता के रूप में माना जाता है ।

तमिल साहित्य में पाँच प्रकार की भूमि बताई गई हैं। वे हैं कुरिंजी (पहाड़), मुल्लई (जंगल), मारुथम (कृषि), नीथल (तटीय) और पालई (रेगिस्तान)। प्रत्येक प्रकार की भूमि का एक अलग देवता होता है। भगवान कार्तिक कुरिंजी क्षेत्र के नेता हैं। उनके पास एक आयुध है जिसे वेल के नाम से जाना जाता है, जो पार्वती के शक्ति का स्वरूप और कार्तिक के वीरता, बहादुरी और धार्मिकता का प्रतीक है।

छह मंदिरों की मुख्य परंपराओं में से एक है भक्तों का मुंडन कराना। वे अपने सर से बाल हटा देते हैं और यह परंपरा इस मंदिर के मन्नत के रूप में मानी जाती हैं। एक अन्य परंपरा यह है कि भगवान की मूर्ति के चंदन के लेप से अभिषेक करना है। यह दिन के अंत में मंदिर बंद होने से पहले किया जाता है। कहा जाता है कि इस लेप में औषधीय गुण पाए जाते हैं। वहां का प्रसाद पंचामृतम केला, घी, शहद, गुड़ और खज़ूर जैसे पाँच द्रव्य का मिश्रित रूप हैं।

छठी से तेरहवीं शताब्दी ईस्वी तक चोल काल के अंत में, मुरुगन एक शिक्षक और दार्शनिक की भूमिका में मजबूती से स्थापित हो गए। वह शैव सिद्धांत धर्मशास्त्र के दार्शनिक और प्रतिपादक होने के साथ-साथ तमिल भाषा के संरक्षक देवता भी मानते हैं।

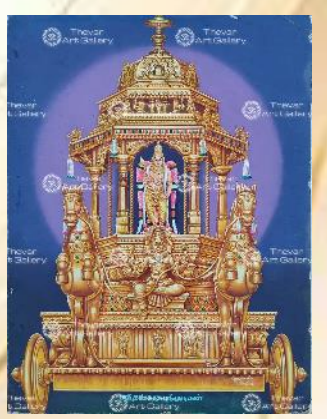

तईपूसम उत्सव तमिल महीने तई की पूर्णिमा के दिन पूसम तारे के संगम पर मनाया जाता है। यह त्योहार असुरों पर मुरुगन की जीत की याद में मनाया जाता है और इसमें कावड़ी आट्टम की अनुष्ठानिक प्रथाएं शामिल हैं, जो आध्यात्मिक ऋण को संतुलित करने के साधन के रूप में शारीरिक बोझ उठाने का एक औपचारिकता है। कावड़ी साधारण लकड़ी से बना हुआ धनुषाकार या अर्ध-गोलाकार के होते हैं जो फूलों और मोर पंखों से सजाया जाता है। कावड़ी के उपासक अक्सर प्रसाद के रूप में गाय के दूध का एक बर्तन ले जाते हैं और वेल से त्वचा, जीभ या गालों को छेदकर खाली पैर पहाड़ चढ़ते हुए भगवान के दर्शन करते हैं। रात को भगवान को बिठाकर सोने का रथ खींचना भी मन्नत है, जिसकी शुरुआत मंटप से होगी। भक्तों द्वारा मंदिर के चारों ओर भगवान मुरुगन की शोभा यात्रा निकाली जाएगी। उसके बाद मंदिर बंद किए जाते हैं।

सुश्री पूजा साहू
कनिष्ठ अनुवादक

कुछ विवाह ऐसे भी

भारत विवधाताओं का देश है। इसमे विभिन्न संस्कृतियों एवं रीति रिवाजों का सम्मिश्रण है। रीति रिवाज़ अलग-अलग कार्यों से जुड़े होते हैं। प्रत्येक कार्य को करने के लिए भिन्न-भिन्न संस्कारों का उल्लेख है। प्राचीन समय में चालीस प्रकार के संस्कारों का उल्लेख है जो, अब समय के साथ घट कर केवल सोलह ही रह गई है। इन संस्कारों को हिन्दू धर्म में षोडश संस्कार के नाम से जाना जाता है, जो बच्चे के जन्म के पहले से, अर्थात माता के गर्भ में रहने से लेकर व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात परिजनों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है।

षोडश संस्कारों में एक संस्कार, विवाह संस्कार भी है । विवाह संस्कार समाज के हर वर्ग के लोगों में सम्पन्न कराया जाता है जिसमें जनजातीय विवाह भी सम्मिलित है। जनजातीयाँ, भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। यह भारतीय संस्कृति को सुशोभित करती है। जनजातियों में भी विभिन्न प्रकार के विवाह संस्कार प्रचलित हैं, जो अन्य लोगों के लिए काफी रोचक है।

लमसेना विवाह- इसका एक अन्य नाम घरजिया भी है । यह मध्यप्रदेश की बैग जनजाति की प्रथा है। जब लड़के के माता-पिता विवाह करने में असमर्थ होते हैं तब लड़का, लड़की के पिता के घर स्वेच्छा से रहने चला जाता है। वहां वह खेती-बाड़ी, आदि सभी काम करता है। लड़की के पिता लड़के के काम से संतुष्ट होकर शादी के लिए सहमति देते हैं।

अपहरण विवाह- इस विवाह को पायसोतूर भी कहा जाता है। यह विवाह गोंड जनजाति में प्रचलित है। इसका चलन असम,बिहार व मध्यप्रदेश की जनजातियों के बीच है। यह विवाह अपने नाम के अनुरूप ही है। इसमें युवती के माता-पिता के अनुरोध पर युवक के द्वारा युवती का हरण किया जाता है। सामाजिक विकास के लिए और नए कानून व्यवस्था के कारण यह

विवाह पद्धति अब क्षीर्ण होती जा रही है और अवशेष के रूप में केवल अभिनयात्मक हरण ही है।

पैठुल विवाह- इस विवाह का अन्य मज़ेदार नाम हठ विवाह भी है। यह विवाह बिरहोर, हो, ओराव, कमार, व मुंडा जाती के लोगों में होता है। इस विवाह में लड़की हठपूर्वक लड़के के यहां तब तक रहती है जब तक स्वयं युवक और उसके परिजन उसे स्वीकार नहीं कर लेते। कभी-कभी ऐसा करते हुए लड़की का अनादार भी होता हैं, इसलिए इसका एक अन्य नाम अनादर भी है।

पठौनी विवाह- इस विवाह का संबंध गोंड जाती से है। यह विवाह आज की विवाह पद्धति के परिपेक्ष्य में पूर्णतः विपरीत है। इस विवाह की अनोखी बात यह है की इसमें वधू पक्ष बारात लेके जाती है और वर पक्ष उनका स्वागत करती है। विवाह सम्पन्न होने के बाद वधू वर को विदा करके ले जाती है।

दो दिल मिले दो वंश मिले सपनों में श्रृंगार किया।
दो परिवारों ने संग चलना स्वीकार किया ।।

श्री अरुण विकास
वरिष्ठ अनुवादक

दीपावली

रात के ललाट पर
रश्मियों की धार है
तारों से झर रही शुभ-सगुण उपहार है
दीपों की जग-मग माला
हार सी लहर रही
आज रात को रात भी दुल्हन सी दमक रही।
सम्पूर्ण देश आज
शीतलता की छांव में
डूब पड़ा है भक्ति की रसमयी गान में

खिल पड़े हैं वो कुसुम जो सुषुप्त थे पड़े
और लोचनों से देख रहे हैं नीड़ों में खग खड़े।
गंगा की अविरल धारा
अपने लय में बह रही
आज के दिन, वह भी थिरक रही
नाच रहे रश्मियों के कण-कण
उसके बाहों के पहरे में
मां भी मुस्कुरा रही नेह के घेरे में।

श्रीमती रोहिणि प्रिया
लेखापरीक्षक

मूर्ख बंदर

बहुत समय पहले एक घने जंगल में एक मूर्ख बंदर रहता था। एक दिन उसे बहुत भूख लगी और इधर-उधर घूम रहा था तो उसने एक किसान को एक पेड़ के नीचे आराम करते देखा, उसके पास एक टिफिन बॉक्स रखा हुआ था। बंदर जो शरारती था, उसने किसान का भोजन चुराने का फैसला किया।

वह जल्दी से टिफिन बॉक्स को उठा कर पेड़ पर चढ़ गया। किसान जागा और उसने बंदर को अपने भोजन के साथ देखा। वह चिल्लाया और टिफिन वापस पाने की कोशिश करने लगा। यह देख कर बंदर पेड़ की ऊँचाई पर चढ़ गया और किसान को बेसहारा देख आनंदित होने लगा।

बंदर ने वह बॉक्स खोला, तो उसने देखा कि उसमें कुछ चावल और थोड़ी सी मिर्च थी। बंदर को उस मिर्च की पहचान नहीं थी, इसीलिए उसने एक बड़ा टुकडा चबाया। जैसे ही बंदर ने चबाना शुरू किया वह मिर्च के तीखेपन से चिल्लाने और कूदने लगा। उसका मुहँ जल गया था। यह सब किसान नीचे से देख रहा था और उसने कहा "यह सज़ा तुम्हे मेरा भोजन चुराने के लिए मिला है"।

शिक्षा: चोरी मत करो, क्योंकि इससे अप्रिय परिणाम हो सकता है।

अपने में है मस्त कलंदर, दिन भर करे जो, उछल कूद अंदर।
बच्चे देखकर कहे, अरे ! देखो - बंदर।

श्री अखिलेश
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अशोक महान: युद्ध से बुद्ध तक

भारतीय इतिहास के सुनहरे पन्नों पर सम्राट अशोक का नाम शीर्ष पर रहा है। सम्राट अशोक ने बहुत कम समय में अपने साम्राज्य का विस्तार किया और वो साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग पूरे क्षेत्र, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और म्यान्मार के अधिकांश भू-भाग पर फैला हुआ था।

अशोक ने अपने शासनकाल में ज्ञान के विस्तार के लिए अनेकों शिलालेख बनवाए उनमें से एक अशोक स्तंभ सारनाथ में स्थित है, जिसे आज भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।अशोक ने अपने शासनकाल में कई युद्ध लड़े और कोई युद्ध नहीं हारा। उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध, कलिंग युद्ध था जिसमें उन्होंने जीत हासिल की थी।

कहा जाता है कि जब सम्राट अशोक कलिंग के युद्ध के बाद युद्धस्थल पर अपनी जीत का अनुभव करने गए, तब वहां उन्हे एक बौद्ध भिक्षु मिला। अशोक ने भिक्षु के समक्ष अपने शौर्य और जीत का बखान किया।

तब भिक्षु ने अशोक को युद्ध के नरसंहार और परिणाम को दिखाया और उसे बुद्ध के अहिंसा के मार्ग के ज्ञान को बतलाया। भिक्षु के एक-एक शब्द ने अशोक के अंतर्मन को झंझोड़ कर रख दिया। अब अशोक युद्ध के परिणाम से हताश हो चुका था। उसे अपनी जीत का कोई मतलब नजर नहीं आ रहा था..उसने जीत में अपनी हार को पाया। अब अशोक हार चुका था। अशोक ने शस्त्र रख दिए। अपनी जीत में हार का एहसास होना अशोक की वास्तविक जीत की ओर पहला कदम था।अब अशोक शून्य हो चुका था।अशोक महान ने अहिंसा, सत्य, प्रेम, दान और परोपकार के मार्ग पर चलने का निर्णय किया।अब अशोक बौद्ध में समाहित हो चुका था।

अब अशोक, अशोक नहीं रहा, वह शून्य हो गया। युद्ध से सम्राट अशोक वापस नहीं लौटा, वहां से बुद्ध लौटा।

"जितना कठिन संघर्ष होगा, जीत की खुशी उतनी ही अधिक होगी"
--साम्राट अशोक

श्री आशीष कुमार साव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कुन्नूर के चाय बागान में एक आधिकारिक दौरा

हाल ही में मैंने अपने कार्यक्षेत्र से जुड़ी एक अद्वितीय यात्रा का अनुभव किया। जब मैं कुन्नूर में स्थित ग्लेंडेल नामक चाय के बागान में अपने सहकर्मियों के साथ कार्य विशेष दौरे पर शामिल हुआ यह दौरा चाय बोर्ड इंडिया लेखापरीक्षा कार्यक्रम का एक अहम हिस्सा था।

इस दौरे ने हमें चाय उद्योग के संदर्भ में एक नई दृष्टी प्रदान की। जहाँ चाय की खेती और उसके विभिन्न पद्धतियों को हमने विस्तार से समझा हमने यह भी देखा कि किस प्रकार चाय की कटाई की जाती है, कैसे इसे कारखाना तक पहुँचाया जाता है तथा इनके उत्पादन प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को समझा। गौरतलब है कि चाय उत्पादन की प्रक्रिया अपने आप में काफी तकनीकी तथा श्रम ग्रहित है। दिसंबर से जनवरी में नीलगिरी के पहाड़ों पर अत्यधिक वर्षा होती है जिससे तापमान में काफी गिरावट देखने को मिलती है, ऐसे में बारिश और ठंड के दोहरी मार से पहाड़ी जीवन और चाय कर्मियों का कार्य चुनौतीपूर्ण हो जाता है। कुछ श्रमिकों से बात-चीत के बाद हमें यह जानकारी मिली कि श्रम की कमी के कारण इन्हें जरूरत से ज्यादा घंटे काम करने पड़ते हैं।

इस दौरे के माध्यम से हमने कुन्नूर के प्राकृतिक सुंदरता का भरपूर आनंद उठाया, आंखों से जिन दृश्यों को हमने देखा, उन्हें इन पन्नों पर अभिव्यक्त करना बेहद मुश्किल है। इसके कुछ चुनिंदा उदाहरण इस अनुच्छेद के साथ संलग्न कर रहा हूँ ।

इस नज़ारे का लुत्फ उठाते हुए हमारी टीम तरह-तरह की चाय की पत्तियों के नमूनों को देखा और उससे बनी चाय का सेवन भी किया जो उस कड़कड़ाती ठंड में इन दृश्यों पर चार चाँद लगाने के लिए पर्याप्त था।

ऐसे व्यावहारिक तथा सूचनापूर्ण दौरे हमारे ज्ञान और अनुभव को भी सींचती है तथा हमारे व्यक्तिगत जीवन में संतुलन और संवाद का बेहतर माहौल प्रदान करती है एवं कार्यक्षेत्र को एक नई ऊंचाई एवं दिशा प्रदान करती है।

छोटी सी ही सही पर एक ऐसी मुलाकात हो
हम तुम चाय पियें और हल्की सी बरसात हो।

श्री अखिलेश
सहायक लेखापरीक्षक आधिकारी

अनकही

अरे भाई हद करते हो!

गुमसुम रहते हो

अब बात कहां करते हो।

जब कह नही पाते

वो ख्वाब कहां रखते हो।

और जो सह नही पाते

ऐसे जज़्बात कहां रखते हो।

क्या साहब हद करते हो!

चिरकाल से थके नही क्या

क्यों बेमतलब लड़ते हो ।

अंदर से जो जलते हो

तो राख कहां रखते हो।

क्या छाया अंधकार है

या उजियारे से डरते हो?

क्या बंधु क्या करते हो!

क्यों बेमंजिल भाग रहे हो

विपरीत दिशा से निकलते हो।

पंख जुड़े उम्मीदों के फिर

क्यों जमीन पर चलते हो।

सबसे पूछते हो, क्या करते हो?

क्यों इतने सवाल करते हो

बतलाओ कि क्या भांप रहे हो।

क्या भाई इधर उधर झांक रहे हो

कब से किनारे पर अवसर ताक रहे हो।

कितना गहरा मन है

कब अपने अंदर झांक रहे हो!

मन की बात कह देने से फैसले हो जाते हैं,
मन में रखने से फासले हो जाते हैं।

श्रीमती एन.नलिनी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक जादूगर और उसकी जादुई गुफा

एक समय की बात है, पहाड़ियों के बीच बसे एक अनोखे गाँव में, मिस्टर विलार्ड नाम का एक दयालु जादूगर रहता था। मिस्टर विलार्ड पूरे गाँव में अपनी अविश्वसनीय जादुई करतबों के लिए जाने जाते थे, जो हमेशा युवाओं और बूढ़ों के चेहरों पर मुस्कान ला देते थे।

एक दिन, जब मिस्टर विलार्ड जंगल में टहल रहे थे, तो उन्हें एक छिपी हुई गुफा का पता चला। यह कोई साधारण गुफा नहीं थी; इसमें एक जादुई आभा थी जो उसे करीब खींचती थी। जिज्ञासा बढ़ी, श्री विलार्ड गुफा के अंदर चले गए।

उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गुफा कल्पना से परे आश्चर्यों से भरी हुई थी। वहाँ किताबों से सजी अलमारियाँ थीं जिनमें लाखों साल पहले हमारे ऋषि-मुनियों के द्वारा लिखे हुए हजारों मंत्र और उनके रहस्य थे साथ ही वहाँ पर सैकड़ों जादुई रंग-बिरंगे चमकते क्रिस्टल थे जो सितारों की तरह गुफा को रोशन कर रहे थे और वहाँ कई प्रकार की मंत्रमुग्ध करने वाली पुरानी वस्तुएँ थीं।

श्री विलार्ड को एहसास हुआ कि वह अंतहीन जादू की गुफा में पहुँच गये हैं। उत्साह और संभावनाओं से उसका हृदय भर गया। उन्होंने अपने गांव में खुशियां लाने के लिए इस जादुई गुफा का उपयोग करने का फैसला किया।

हर दिन, श्री विलार्ड गुफा में जाते थे और नए मंत्र और तरकीबें सीखते थे। फिर वह गाँव लौटकर सभी गाँव वालों को अपना सीखा हुआ जादू दिखाते, साथ ही वे उनके आंतरिक घरेलू व गाँव के मामलों मे भी जादू से मदद करते थे। सभी गाँव वाले उसकी क्षमताओं पर आश्चर्यचकित थे और उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था क्योकि अब उनके सभी मामले बहुत ही आसानी से जादू से हल होने लगे थे।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, श्री विलार्ड ने ग्रामीणों में बदलाव देखा। वे आलसी हो गये थे और उसके जादू पर पूरी तरह से निर्भर हो गये थे। वे अब न तो कड़ी मेहनत करते थे और न ही स्वयं समस्याओं का समाधान करते थे। वे बस श्री विलार्ड द्वारा अपने जादू का उपयोग करके सब कुछ ठीक करने की प्रतीक्षा करते थे।

यह श्री विलार्ड को बहुत परेशान किया। उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने अनजाने में सभी के आत्मनिर्भरता और दृढ़ संकल्प की भावना को छीन लिया है। वह जानता था कि उसे चीजें सही करनी होंगी।

एक दिन, उन्होंने ग्रामीणों से घोषणा की, "मेरे प्यारे दोस्तों, मुझे एक बात कबूल करनी है। मैं जो जादू करता हूं वह सिर्फ मेरा नहीं है; यह जादू गाँव से दूर एक पहाड़ी पर बनी उस मंत्रमुग्ध गुफा से आता है। लेकिन केवल जादू पर भरोसा करने से हम प्रकृति का असली आनंद भूल गए हैं और जीवन की हर चुनौतियों का सामना करना और उन पर काबू पाना हमने लगभग भुला दिया है।"

इसके साथ ही, श्री विलार्ड ग्रामीणों को जादुई गुफा तक ले गये। उन्होंने गुफा के द्वार को सील करने के लिए एक जादू किया और कहा, "अब से, हम समस्याओं को हल करने और खुशी पैदा करने के लिए अपने प्रयासों और सरलता पर भरोसा करेंगे।"

ग्रामीण पहले तो चौंक गए लेकिन जल्द ही उन्हें श्री विलार्ड के शब्दों की समझदारी का एहसास हुआ। उन्होंने कड़ी मेहनत की, एक-दूसरे की मदद की और अपनी उपलब्धियों में खुशी पाई।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, गाँव पहले की तरह समृद्ध हुआ। लोग पहले से कहीं अधिक खुश और संतुष्ट थे, और उन्होंने सीखा कि सच्चा जादू उनके भीतर ही निहित है।

कहानी का नैतिक मूल्य : मिस्टर विलार्ड और उनकी जादुई गुफा की कहानी हमें सिखाती है कि भले ही बाहरी मदद मूल्यवान हो सकती है, लेकिन जीवन का असली जादू हमारे अपने प्रयासों, दृढ़ संकल्प और संसाधनशीलता में निहित है। दूसरों या बाहरी स्रोतों पर बहुत अधिक भरोसा करने से हम अपनी क्षमता से वंचित हो सकते हैं।

हमें अपनी दुनिया बदलने के लिए जादू की ज़रुरत नहीं है।
हमें जो भी शक्ति चाहिए वो पहले से ही हमारे अन्दर मौजूद है।।

\- जे. के.रौलिंग

श्री नवीन कुमार 'पटनी'
लेखापरीक्षक

कहाँ रह गए तुम.....?

साथ साथ चल रहे थे
स्वप्न कई पल रहे थे
निहारते नयन हमारे
उग रहे थे, ढल रहे थे

फिर

अचानक क्या हुआ कि
नैसर्गिक छटा समाँ की
ले गयी तुम्हारा मन
साथ मेरे हो मगर
साथ मेरे हो नहीं

इन सुभाषित वादियों में
मौन मुझको दो नहीं

मैं तुम्हारे पास बैठा
सदायें तुम्हें दे रहा
दो पतवारी नाव को
मैं अकेले खे रहा

मेरे साथी, मेरे दिलवर
कुछ कहो, कुछ सुनो तुम
बोलो प्रिय !
साथ मेरे चलते-चलते
आख़िर, कहाँ रह गए तुम...?

सेवानिवृत्ती

इस कार्यालय के निम्नलिखित पदधारियां अपने दायित्वों को पूर्ण करने के बाद स्वैच्छिक सेवानिवृत्ती/अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए है। आपकी सेवानिवृत्ती पर बधाई एवं सुखद, स्वस्थ और पूर्ण भविष्य के लिए शुभकामनाएं ।।

क्रम सं.	नाम एवं पदनाम	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ती/अधिवर्षिता की तिथि
1	श्रीमती सी निर्मला पर्यवेक्षक,	01.04.2024
2	श्रीमती निर्मला योगानंदन व.लेप.अ	30.04.2024
3	श्री आर वैधीस्वरन सहा.पर्यवेक्षक	31.05.2024
4	श्री डी.रविचन्द्रन वरिष्ठ लेखापरीक्षक	28.06.2024
5	श्रीमती वी पी जयललिता, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.07.2024

श्रीमती एन श्यामला
सहायक पर्यवेक्षक

मुक्तिनाथ मंदिर नेपाल की मेरी यात्रा

हमने 19 मई 2022 को चेन्नै से दिल्ली जानेवाली हवाई जहाज में अपनी यात्रा शुरु की। दिल्ली से गोरखपुर जाकर हम सनौली पहुँचे । सनौली भारत और नेपाल की सीमा पर स्थित है । हमने भारत-नेपाल सीमा पर फोटो भी खिंचवाई। वहाँ से हम पोखरा के लिए रवाना हुए । पोखरा नेपाल का एक व्यापारिक शहर है।

हम वहाँ के मशहूर फेवा झील में नौकायन के लिए भी गए। वहाँ वैष्णव मंदिर में पाए जानेवाले शालीग्राम मिलते हैं। हमने भी कुछ शालीग्राम खरीदे। पारंपरिक रूप से विष्णु शालिग्राम शिला या शालिग्राम पत्थर के रूप में पूजे जाते हैं। पोखरा से हम एक छोटे हवाई जहाज से ज्योमसोम पहूँचे जो मस्तैंग जिले में स्थित है। वहाँ से हम बस में यात्रा करके मुक्तिनाथ मंदिर पहूँचे। मुक्तिनाथ मंदिर 108 दिव्य देशों के मंदिरों में से एक है। 'दिव्य देश' वैष्णवों का पवित्र मंदिर होता है।

कुछ लोग घोडे पर सवार होकर मंदिर तक आ रहे थे। मंदिर के बाहर एक बहुत बड़ा घंटा था जिसे बजाकर हमने अंदर प्रवेश किया। मुक्तिनाथ मंदिर छह महीने तक बर्फ से ढका रहता है। हर साल अप्रैल से सितंबर तक मंदिर के कपाट दर्शन के लिए खुला रहता है। मंदिर के ठीक सामने दो पवित्र जल कुंड हैं, जिन्हे 'लक्ष्मी कुंड और सरस्वती कुंड' कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन कुंडों में स्नान करने के फलस्वरुप नकारात्मक कर्म धुल जाते हमने दोनों कुंडों में स्नान किया। मंदिर के पीछे 108 गोमुखी धाराएं है, उन धाराओं में स्नान करने के उपरांत ही मंदिर में प्रवेश कर सकते हैं। मंदिर में भगवान मुक्तिनाथ और महालक्ष्मी की मूर्ती है, जो शालीग्राम क्षेत्र कहलाता है। मंदिर के अंदर बड़े-बड़े शालीग्राम भी देखने को मिलते हैं। भगवान के दर्शन के उपरांत हमारा मन आनंदित हो उठा। दर्शन के बाद हमने मंदिर की परिक्रमा भी की। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर में श्री नारायणजी के दर्शन करने से मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

मुक्तिनाथ मंदिर से निकलकर पुनः हवाई जहाज से पोखरा पहूँचे। हवाई जहाज में सफर करते समय हमने माउंट एवरेस्ट भी देखा। कुछ हवाई जहाज एवरेस्ट शिखर के ऊपर से भी जाते हैं, जहां से एवरेस्ट शिखर का नज़ारा बहुत ही अद्भुत दिखता है। पोखरा पहूँचने के बाद हम वहां से नेपाल की राजधानी काठमांडु के लिए निकल पड़े। वहाँ पहुँचकर हमने प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर में शिवजी का दर्शन किया। वहां जल नारायण नामक नारायणजी का विख्यात मंदिर है, जिसमें भगवान विष्णु गण्डक नदी के ऊपर योगनिद्रा के रूप में विराजमान हैं। वहां से कुछ ही दूरी पर मनोकामना देवी का मंदिर भी है। यह मंदिर पर्वत के शिखर पर है, हम कार से वहां पहुँचकर देवी के दर्शन किए। वहाँ से निकलकर हम जनकपुर पहुँचे जो माता सीता का जन्म स्थल कहलाता है। वही पर राम, लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न सभी के अलग-अलग मंदिर है। इन चारों मंदिरों के बीच एक बड़ा सा मंड़प है। जहां भगवान राम का माता सीता के साथ तथा उनके अन्य भाईयों का विवाह हुआ था। उस मंडप में चारों दशरथ नंदन अपनी पत्नियों के साथ, महाराजा दशरथ, महाराजा जनक, माता सुनैना, महर्षि विश्वामित्र और ऋषि वशिष्ट सबकी मूर्तियाँ है। संध्या के समय यहाँ राम भजन होता है।

जनकपुर से निकलकर हम नारायणगढ नामक स्थान पर पहुँचे। जहां भगवान विष्णुजी का मंदिर है, जो गण्डक नदी के तट पर स्थित है। हमने गण्डक नदी में स्नान किया। स्नान करते वक्त हमें विभिन्न आकारों के शालिग्राम मिले, जिन्हे पूजाकक्ष में रखना अत्यंत पवित्र माना जाता है। इसके बाद हम सनौली के रास्ते गोरखपुर पहुँचे और गोरखपुरनाथ के दर्शन किए। फिर हमने गीता प्रेस देखा और दिल्ली होते हुए चेन्नै वापस आ गए ।

अंततः हमने इस पवित्र यात्रा के हर एक क्षण का आनंद लिया, स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद चका तथा विभिन्न मंदिरों के भी दर्शन किए। जिससे हमे एक अलग ही शांती की अनुभूती हुई। इस प्रकार यह यात्रा मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय यात्रा बन गयी ।

"हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है." -
सुमित्रानंदन पंत

श्री अरुण विकास
वरिष्ठ अनुवादक

प्रेम

१

जब मौन रहने के भी शब्द पढ़ लिए जाएं
जब हंसी के पीछे छुपे दर्द को जान लिया जाए
जब उसकी/उसके बातों से झलकने लगे
ख्याल रखने का भाव
तब समझो की यह प्रेम की भाषा है।

प्रेम वह जो अनुभूति लिए हो,
जो शाश्वत हो
ऐसा प्रेम यूं ही नहीं हो जाता किसी से
इसके होने में होता है एक सूक्ष्म तरंग
जो आती है दोनों ओर से
यही सूक्ष्म तरंगे अपनी विराटता को लिए हुए
एकाकार हो जाती हैं एक - दूसरे में
और इस तरह से मिलन हो जाता है प्रेम का प्रेम से।

प्रेम आप्लावित हो जाता है प्रेम में
यही वो जगह है जहां प्रेम, ईश्वर प्रतीत होता है
और हम उसके प्रेमी।

२

एक व्यक्ति जब किसी से प्रेम करता है
तब उसे वह हर कुछ देना चाहता है
तन, मन, धन, समय, सब कुछ
अपने जीवन का एक - एक हिस्सा
उसकी सोच में सदा रहती है वह
उसकी अनुपस्थिति में भी
उसकी उपस्थिति को महसूस करता है वह
एकदम जीवंत।

प्रेम अकारण ही हो जाता है
और बस जाता है हमारे दिलों-दिमाग पे
जिसमें होता है समर्पण,
त्याग, ख्याल और उसकी चिंता
कि वह जहां रहे ठीक रहे
खुशहाल, खुशमिजाज रहे।

प्रेम स्वतंत्र होता है
बिल्कुल हमारी चिंतन की तरह
समय के साथ यह गहरा होता जाता है
एकदम सागर की तरह
जिसमें होता है केवल सुकून।

यही सुकून कब तब्दील हो जाता है
हमारी हर दिन की प्रीत में
पता ही नहीं चलता!

३

खिला हूँ आओ दीदार कर लो
खुली आंखों से भर लो प्यार कर लो
प्रकृति की संगीत को सुन सको तो सुनो
चांद की रोशनी की तरह स्वीकार कर लो।

क्यूं बांटते हो दुःख और गम
बहती हवा की तरह दो-चार कर लो
और नजरों में भर सको जो प्रेम तो प्रेम कर लो।

दुनियादारी है अपनी जगह
जो रह सको तुम खुश ऐसा माहौल कर लो
प्रकृति के आंगन में बिखरे हैं अनगिनत
खुशबूदार सुमन
जो चुन सको तुम ऐसी प्रीत कर लो।

ए "अरुण" रास्ते में होंगे कई गड्ढे
तुम बचकर आगे बढ़ चलो ऐसी नज़र कर लो।

श्री राहुल मौर्य

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैंने कैसे खाना बनाना शुरू किया

नमस्ते दोस्तों। मेरा नाम राहुल मौर्य है और मैं एक छोटे से गाँव हाथोज से हूँ, जो भारत के गुलाबी शहर जयपुर से सिर्फ 12 किलोमीटर दूर है। मेरा चयन सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में हुआ तथा मेरी तैनाती कार्यालय प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, चेन्नै में हुई। चूंकि यह कोविड का समय था, मेरी माँ मेरे बारे में बहुत चिंतित थीं, इसकी वजह थी मुझे खाना बनाना न आना। हालांकि, किसी तरह मैंने उन्हें समझा लिया और सरकारी सेवा में शामिल होने के लिए चेन्नै आ गया। कोविड लॉकडाउन संबंधी नियमों के चलते मैं इस सेवा में 14 दिनों के क्वारंटाइन को पूर्ण करने के उपरांत ही शामिल हो सका।

क्वारंटाइन की अवधि के दौरान, मैंने तीन अन्य सहायक लेखापरीक्षा अधिकारियों से मुलाकात की जो मेरे साथ सेवा में शामिल होने के लिए यहाँ आए थे। मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात थी कि उनमें से दो लोगों को खाना बनाना आता था। इस प्रकार, मेरा क्वारंटाइन समय बहुत खुशी से बीता। क्वारंटाइन के बाद, उनमें से दो लेखापरीक्षा दल में शामिल होने के लिए चले गए। मैंने अन्य सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, दीपांशु सिंह के साथ रहना जारी रखा।

भगवान की कृपा से, हमने कोविड की दोनों लहरों से खुद को संभाल लिया। कोविड की तीसरी लहर के दौरान, मैंने एक बार में दो मास्क पहनना शुरू कर दिया और इस वायरस से खुद को सुरक्षित रखने के लिए सभी सावधानियों का पालन करने लगा।

दिनांक 3 फरवरी 2022 को, हमेशा की तरह, मैं अपनी एक सहकर्मी और सबसे अच्छी दोस्त अंकिता अग्रवाल के साथ लंच कर रहा था। लंच के दौरान, मैंने उसे बताया कि आज मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ और मुझे कोविड हो सकता है। लेकिन उसने हंसकर इसे नजरअंदाज कर दिया और कहा, "ठीक है, फिर हम दोनों को हो जाएगा।"

लंच के बाद मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा था, करीब 3 बजे, मेरा घुटना दर्द करने लगा और मेरा सिर भी। मैं थका हुआ और गर्म महसूस करने लगा था। इसलिए मैं अपने वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पास गया और उनसे मुझे जल्दी ऑफिस छोड़ने की अनुमति देने का अनुरोध किया। अनुमति मिलने के उपरांत मैंने 170 रुपये में एक ऑटो बुक किया। जैसे ही मैं घर पहुंचा, बहुत थका हुआ और उनींदा महसूस कर रहा था, इसलिए मैंने ऑटोवाले को 500 रुपये दिए और उससे कहा कि बाकी पैसे रख ले क्योंकि मैं बाकी पैसे लेने के लिए इंतजार नहीं कर सकता था।

मैंने अपने घर का दरवाजा खोला और देखा कि मेरे एक रूममेट, सुमित कुमार ने मेरा स्वागत किया, लेकिन मैंने उसे बस इतना ही कहा, "भाई, कृपया अपने कमरे में चले जाओ क्योंकि मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ।" फिर मैं अपने कमरे में गया और सो गया।

मेरा रूममेट रात को खाने के लिए मेरे कमरे में दाल और रोटी लाया। मैंने उसे धन्यवाद दिया, अपना खाना खाया और उससे कहा कि कृपया मेरे कोविड रिपोर्ट आने तक मेरे कमरे में न आएं। मुझे कहना चाहिए कि उस रात जो दाल मैंने खाई वह मेरे जीवन की सबसे अच्छी दालों में से एक थी। इसलिए मैंने सोचा कि अगर मेरी रिपोर्ट सकारात्मक आती है, तो कम से कम मेरा खाना अच्छा होगा। अगले दिन, जब मेरी रिपोर्ट आई और मुझे कोविड पॉजिटिव पाया गया, तो मैं घबरा गया और चिंतित हो गया। मैं यह अपने परिवार के सदस्यों को नहीं बता सकता था क्योंकि मैं घर से दूर था। सुमित ने मेरे लिए दोपहर का खाना बनाया और अपने ऑफिस चला गया। मैंने वह लंच खाया, और विश्वास करो, वह मेरे जीवन का सबसे खराब लंच था। यहां तक कि सुमित ने खुद मुझे फोन करके बताया कि वह खुद उस खाने को नहीं खा पा रहा था।

अगले सात से आठ दिनों तक, मुझे न केवल सुमित से बल्कि कुछ नियमित रेस्तरां से भी खराब खाना ही मिल रहा था। फिर मैंने सोचा कि अगर कोविड से लड़ना है, तो यह खाना ही होगा।

क्वारंटाइन समय के दौरान, मैंने अपने पसंदीदा शेफ रणवीर बरार द्वारा यूट्यूब पर कुकिंग रेसिपी देखना शुरू किया। फिर मैंने तय किया कि मेरी रिकवरी के बाद मैं खाना बनाना शुरू करूंगा।

विश्वास करो, जब मैंने कोविड के बाद खाना बनाना शुरू किया, तो मुझे अपने कुकिंग कौशल पर विश्वास नहीं हो रहा था। अब मैं कुछ भी पका सकता हूँ। मैं अपने कुछ पकवानों की तस्वीरें साझा कर रहा हूँ:

तो इस तरह मैंने खाना बनाना शुरू किया। कोविड के बाद, जब मैं अपने गाँव गया, तो मैंने अपने परिवार और अपने चचेरे भाइयों के लिए खाना बनाया, और उन्हें बहुत पसंद आया। जब वे मेरी तारीफ करते हैं, तो मैं बस अपने कोविड क्वारंटाइन दिनों को याद करता हूँ। और जब कोई मुझसे पूछता है कि मैंने खाना बनाना कैसे शुरू किया, तो मैं बस उन्हें कोविड की कहानी बता देता हूँ... ।

श्री अरुण विकास
वरिष्ठ अनुवादक

एक मुलाकात

वह आई और चली गई
पर छोड़ गई अपनी खुशबू,
अपनी चहक, अपनी मुस्कान।

उसका पल भर का साथ
जीवन का उत्थान था
उसके साथ की चहलकदमी
प्रेम पथ पर बढ़ते पैरों के निशान से लगे
उसकी मुस्कुराहट जैसे
हवा के साथ हौले - हौले
गलबहियां कर रही हो।

सही है न किसी से मिलना
मिल कर उसे महसूस करना, उसे जीना।

एक स्त्री, एक लड़की
पथप्रदर्शिनी होती है आपकी और मेरी
थोड़े समय के लिए वह मेरी
पथप्रदर्शिनी बन गई और मैं पथिक।

उसका जाना मेरे लिए जाना नहीं था
बल्कि यादों में वह तो सदा साथ रहने वाली थी।

मैं महसूस कर पा रहा हूं कि वह अभी भी मेरे साथ है
बिल्कुल यहीं मेरी बाजू में।

मैं देख पा रहा हूं उसके चेहरे की
चमक को,गालों की लाली को,
अधरों के युग्म को जो अभी-अभी
फूलों में तब्दील होने वाले हैं।

मेरे मन रूपी चित्रकार ने बना रखे हैं
उसके सुंदर पैरों की तस्वीर
जिनकी उंगलियों पे चमक रही है नेल पॉलिश।

कही थी उसने की खामोशी के भी
शब्द होते हैं
शायद इसीलिए चुप रही सारी यात्रा में वो
और मैं पढ़ रहा था
उसके खामोशी भरे शब्द।

श्रीमती सिमी के एस
हिन्दी अधिकारी

आधुनिक जीवन में योगा की आवश्यकता

योगा अनिवार्य रूप से एक अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाने पर केंद्रित है। यह स्वस्थ जीवन जीने की एक कला और विज्ञान है। 'योग' शब्द संस्कृत मूल 'युज' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'जुड़ना' या 'जोड़ना' या 'एकजुट होना' है । योग शास्त्रों के अनुसार योग का अभ्यास व्यक्तिगत चेतना को सार्वभौमिक चेतना के साथ जोड़ता है, जो मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृति के बीच एक पूर्ण सामंजस्य का संकेत देता है, जिसे व्यापक रूप से सिंधु सरस्वती घाटी सभ्यता के 'अमर सांस्कृतिक परिणाम' के रूप में माना जाता है - जो 2700 ईसा पूर्व से चली आ रही है। योग मानवता के भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान को पूरा करने में अटूट संबंध साबित किया है। बुनियादी मानवीय मूल्य ही योग साधना की पहचान हैं।

स्वास्थ्य और कल्याण के लिए योगिक अभ्यास: व्यापक रूप से प्रचलित योग साधनाएँ: आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, ध्यान, समाधि/संयम, बंध और मुद्राएं, युक्ता-आहार, युक्ता कर्म, मंत्र जप, आदि। यम संयम हैं और नियम पालन हैं। इन्हें योग साधनाओं के लिए पूर्व-आवश्यकताएं माना जाता है। आसन, शरीर और मन की स्थिरता लाने में सक्षम हैं जो शरीर की स्थिति को काफी लंबे समय तक बनाए रखने की क्षमता प्रदान करता है। अत: शरीर का लचीलापन, मज़बूती एवं सांसों का नियंत्रण करने में योग सहायता करते हैं। योग किसी विशेष धर्म, विश्वास प्रणाली या समुदाय का पालन नहीं करता है; इसे हमेशा आंतरिक कल्याण की तकनीक के रूप में देखा जाता है।

योगा करते समय ध्यान रखने वाली बातें बस यही है कि योग खाली पेट करना चाहिए योगा करने के तुरंत बाद खाना नही खाना चाहिए। योग की दुनिया में 'शीर्षासन' को 'आसनों का राजा' कहा जाता है, क्योंकि इसका नियमित अभ्यास आपको सिर से लेकर पैर तक फायदा पहुंचाता है। कुछ योगासन के झलकियाँ और आसन से जुड़े फायदे:-

त्रिकोणासन :- पैरों, जंघों, घुटनों, कंधों और रीढ की हड्डी में खिचाव लाता है और उन्हें मज़बूत करता है एवं कमर दर्द और गर्दन दर्द से राहत दिलाता है। तनाव से छुटकारा पाने में मदद करता है। जिन्हें सिर दर्द दस्त या कम रक्त दबाव हो वह यह आसन न करें।

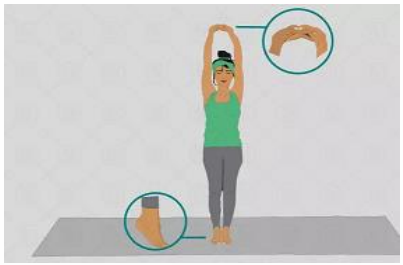

ताड़ासन :- यह आसन शारीरिक और मानसिक संतुलन विकसित करता है।शरीर के पोस्चर में सुधार लाता है। जंघों, घुटनों और टखनों को मज़बूत करता है। फ्लैट पैर की परेशानी में मदद करता है।

भुजंगासन:- रीढ़ की ह़ड्डी को मज़बूत करता है। छाती व फेफड़ों कंधों और पेट में खिचाव लाता है। अस्थ्मा के लिए यह बहुत ही फायदेमन है। यह आसन शरीर की गर्मी को बढ़ाता है जिससे रोग को नष्ट कर देता है। इस आसन के बाद बालासन कर सकते हैं।

बालासन :- बालासन कूल्हों, जंघों और टखनों में खिचाव लाता है। दिमाग को शांत करता है और तनाव एवं अवसाद से राहत देने में मदद करता है। यह आसन करने से संपूर्ण शरीर को आराम देता है। शरीर में लचीलापन कम है, तो भी बालासन कर सकते हैं।

वज्रासन:- यह हर्निया होने से रोकता है और बवासीर से राहत पाने में भी मदद करता है। यह संपूर्ण पाचन तंत्र को सुधारता है, पेट की बीमारियों जैसे एसिडिटी और अल्सर से राहत देता है। इस आसन में शरीर बिना प्रयास के अपने आप एकदम सीधा हो जाता है।

योगासन करने के बाद शरीर को संतुलित करने हेतु पन्द्रह मिनट से आधा घंटे के लिए प्राणायाम या सांस नियंत्रण प्रकिया करने से शरीर तनाव मुक्त हो जाता है। प्राणायाम प्राण और आयाम शब्द का मेल है। प्राण का मतलब ऊर्जा या जीवन शक्ति, आयाम का मतलब विस्तार करना, प्राणायाम का सही मतलब प्राण का विस्तार माने जो प्राण या ऊर्जा को शरीर की सभी नाड़ियों में पहूँचाना। प्राणायाम कई तरह के होते हैं जिसमें नाड़ी शोधन प्राणायाम, कपालभाती, भस्तिका, भ्रामरी, अनुलोम-विलोम जिससे शरीर का तापमान संतुलित होता है।

आधुनिक जीवन में ज्यादातर लोग आठ/नौ घंटे बैठे-बैठे पूरे दिन कार्यालय की व्यस्तता में बिताते हैं जो व्यक्ति अपने लिए एक घंटा कम से कम आधा घंटा योगा करे तो स्वस्थ, संतुलित और तनाव मुक्त जीवन की आशा कर सकते हैं।

क्रम सं	विश्व हिन्दी सम्मेलनों की सूची		देश
1	10-14 जनवरी 1975	नागपुर	भारत
2	28-30 अगस्त 1976	पोर्ट लुइस	मॉरीशस
3	28-30 अक्टूबर 1983	नई दिल्ली	भारत
4	2-4 दिसंबर 1993	पोर्ट लुइस	मॉरीशस
5	4-8 अप्रैल 1996	पोर्ट ऑफ स्पेन	त्रिनिदाद और टोबैगो
6	14-18 सितंबर 1999	लंडन	यूनाइटेड किंगडम
7	6-9 जून 2003	पारामरिबो	सूरीनाम
8	13-15 जुलाई 2007	न्यूयॉर्क शहर	संयुक्त राज्य अमेरिका
9	22-24 सितंबर 2012	जोहानसबर्ग	दक्षिण अफ्रीका
10	10-12 सितंबर 2015	भोपाल	भारत
11	18-20 अगस्त 2018	पोर्ट लुइस	मॉरीशस
12	15-17 फरवरी 2023	नाड़ी, फिजि	फिजी

बाल कविता "बारिश"

श्री रोहित मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

देखो-देखो आई बारिश,
आसमान से आई बारिश
धरती पुलकित हो उठी है
रिमझिम-रिमझिम फुहारे पाकर।

पेड़, फूल, पत्ते और कलियाँ
नदी, पहाड़, खेत और झरने,
आसमान में उड़ते पक्षी,
धरती पर विचरते जन्तु
धन्य हो रहे सब वर्ष जल को पाकर।

वर्ष ऋतु जब आती है
काली घटा-सी छा जाती है,
मन प्रसन्न हो जाता है
जीवन उमंगों से भर जाता है।

श्रीमती गीता सुरेश: श्री के जी कृष्ण कुमार, स.लेप.अ के पत्नी द्वारा बनाया गया पेंटिंग

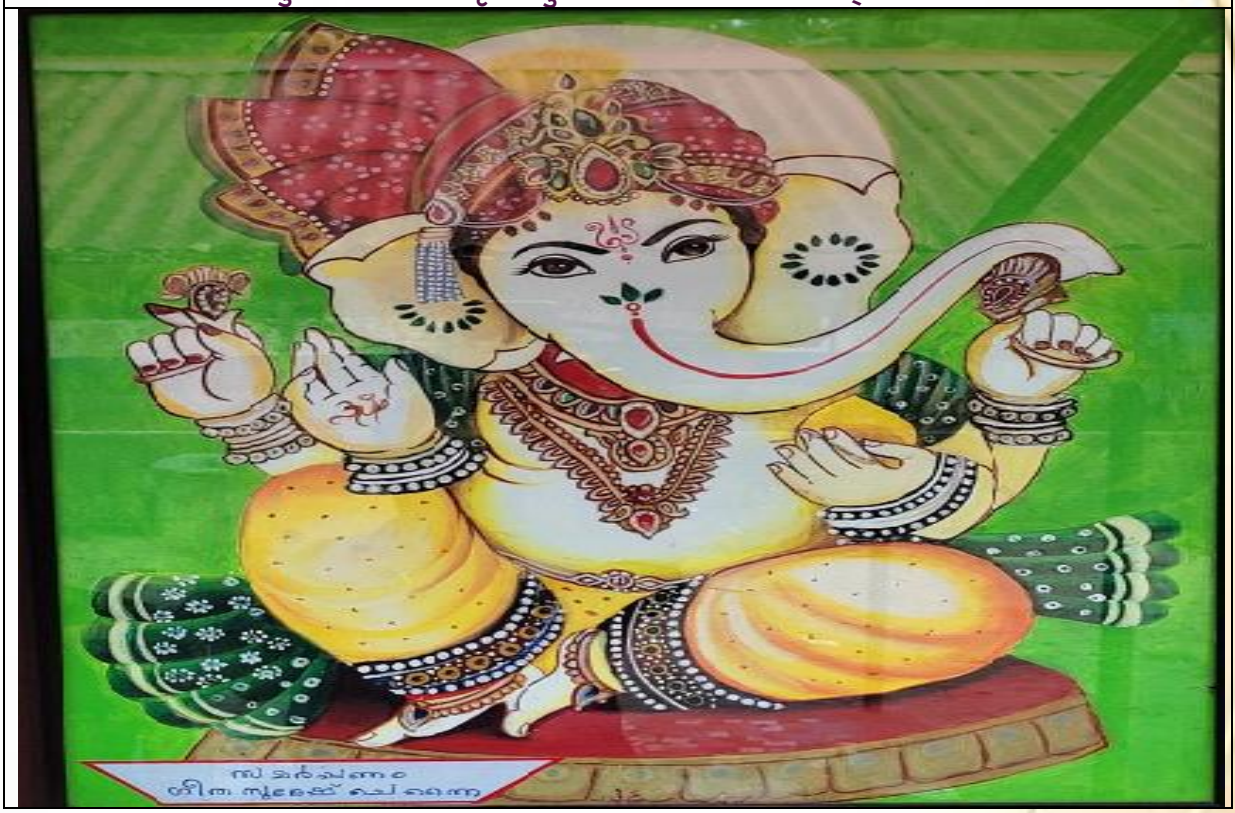

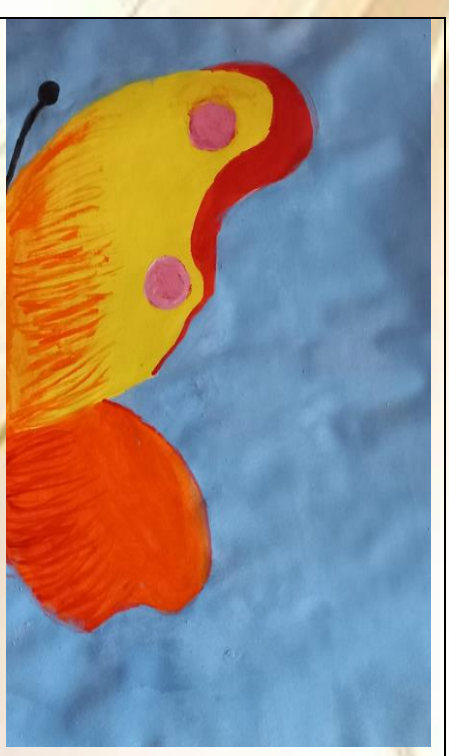

कु. आकर्षा, श्रीमती सिमी के एस हिन्दी अधिकारी की सुपुत्री द्वारा बनाया गया पेंटिंग

श्री नवीन कुमार 'पटनी'
लेखापरीक्षक

एक पत्र बिस्तर के नाम

मेरे प्यारे बिस्तर !

अब तुमसे क्या ही कहूँ मैं,...............

कहते है कि अगर धरती पे कहीं जन्नत है तो वो कश्मीर में है....होगा, पर मुझे तो लगता है कि बिस्तर में है। वो क्या है न कि जन्नत हो या जहन्नुम बिस्तर तो दोनों जगह जन्नत का ही सुख देती है।

अब अगर तुम्हारे आकर्षण की बात करूँ तो बस इतना ही कह सकता हूँ कि कोई पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से भले ही निकल जाए पर सुबह-सुबह तुम्हारी आगोश से नींद का दरवाजा खोल कर बाहर निकल जाए ....ये नामुमकिन सा ही है।

और वो किसान जो चिड़ियों के जगने से पहले खाट छोड़ उठ जाया करता है ....उससे भ्रमित होने की जरूरत नहीं है; दरअसल खाट वो नहीं, बल्कि उसकी मज़बूरियाँ छोड़ती है। तुम्हारे आलिंगन से मुक्त हो पाने की क्षमता विरलों में ही पाई जाती है या फिर मजबूरी में।

खैर सारी तर्कों-कुतर्कों के परे, तुम्हें मेरा तुम्हारे प्रति समर्पण और अगाध प्रेम तो पता ही है।

तुम्हारे प्रेम में खुद को गौण करता- तुम्हारा आशिक.....!!!

चुटकुले

पति: आज तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो....।

पत्नी: सासू माँ अस्पताल में है क्या ?

पति: नहीं क्यों क्या हुआ...।

पत्नी: आपका फोण कहां है ?

पति: ध्यान ही नही दिया चार्ज एकदम 0%

पत्नी: तभी तो... मैं आपके नज़र में आई...।

अप्रैल से जून समाप्त तिमाही के लिए जून 2024 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

इस कार्यालय के श्री नवीन कुमार,लेखापरीक्षक नराकास द्वारा आयोजित आशुभाषण में भाग लेते हुए

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2024 की प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अधिकारी/कर्मचारीगण

श्रीमती एन. नलिनी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वेम्बुलि अम्मन तिरुविषा

वेम्बुलि अम्मन मंदिर, सीपीडब्यूडी क्वार्टर्स परिसर, थिरुमंगलम, चेन्नै में स्थित एक मंदिर है। यहां हर साल श्रावण महीने में विशेष पूजा और तिरुविषा मनाए जाते हैं। इस साल 2024 को भी तीन दिन तक चलती तिरुविषा मनाई गई। जिसका प्रारंभ पंतक्काल से शुरु होता है, जो "बुरी दृष्टि को दूर करने के लिए मंदिर के सामने एक बांस की लकड़ी को खड़ा करने" की प्रक्रिया है। माना जाता है कि गणेश जी की पूजा पहले करने से सभी कार्य सफल हो जाते है, इसलिए तिरुविषा के प्रथम दिन सुबह गणपति होम से पूजा की शुरुआत होती है।

श्रीमद् भागवत में बताया गया है कि भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पूजा के समय, गायों की पूजा की थी। तिरुविषा के अवसर पर गो पूजा की जाती है, जो पवित्र माना जाता है। मिट्टी से बनाए गए घड़े में दूध लेकर क्वार्ट्रस परिसर में शोभायात्रा निकालते हैं, उसके बाद अम्मन का अभिषेक दूध, तेल, घी और शहद से होता है । दोपहर को अन्नदान के साथ सुबह

से शुरु हुआ तिरुविषा को थोडे देर के लिए विराम देते हैं। शाम को अम्मन की पूजा फिर से शुरु करते हैं, जो रात की “ती मिथि” तक होता है। “ती मिथि” अर्थात् अंगारों पर चलना, यह अनुष्ठान त्योहारों और अन्य शुभ अवसरों के दौरान आयोजित किया जाता है । यह किसी के मन्नत अथवा भक्ति के रुप में किया जाता है।

तमिल नाडु में एक ऐसी संस्कृति है कि लडकी की शादी के बाद शुभ अवसर पर फल, नारियल, नींबू, मिठाई, जैसे कई चीजें उसके माता-पिता लाते हैं, जिससे दो परिवारों का संबंध अटूट हो जाता है। इस संस्कृति को “सीर वरिसै” कहते हैं। इसी तरह मंदिर से शोभायात्रा निकालने के बाद क्वार्ट्रस कैंपस की महिलायें फल मिठाई आदि अम्मन को चढाते हैं।

अम्मन मंदिर की एक और विशेषता “वलैकाप्पु” है (चूड़ियों से अम्मन को पूरी तरह सजाना), जो केवल आड़ि (श्रावण) महीने में ही किया जाता है। यह गोद भराई जैसा ही एक परंपरा से जुड़ा है जो गर्भवति महिलाओं के लिए करते हैं। तमिल नाडु में ऐसा माना जाता है कि चूड़ियों की आवाज गर्भावस्था में बच्चे की इंद्रियों और मस्तिष्क की गतिविधियों को प्रेरित करती है। 7वें महीने से बच्चों की श्रवण क्षमता शुरू हो जाती है, इसी समय महिलाओं को वलैकाप्पु किया जाता है। उस दिन मंदिर में आनेवाले सभी महिलाओं को चूड़ीयाँ प्रसाद के साथ बाँटा जाता है।

सुश्री. उपासना साहू
सुश्री पूजा साहू कनिष्ठ अनुवादक की बहन

एक शुरुआत: मेरे पहले सफर की ओर ...

बस्तर या दक्षिण कोसल, छत्तीसगढ़ का एक जिला है। यह नाम सुनते ही सबसे पहली अवधारणा जो मन में आती है, वह नक्सलवाद की है। सभी लोगों की तरह मैं भी यही धारणा मन में लेकर यंहा आई। एक शिक्षक के रूप में मेरी पहली पोस्टिंग बस्तर संभाग के तोकापाल क्षेत्र में हुई। मन में खुशी से ज्यादा कोलाहल था, चूँकि आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण उनकी भाषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खानपान हम मैदानी क्षेत्रों में रहने वालों से काफ़ी भिन्न है। मन में यही कशमकश चल रहा था कि, क्या यंहा आकर मेरे भविष्य पर प्रश्न चिन्ह तो नहीं लग जाएगा।

कुछ इन्हीं उलझनों के साथ मैं बस्तर पहुँची और अपने विद्यालय पहुँच कर कार्यभार ग्रहण किया। स्कूल में बच्चों से मिली और ऐसा लगा मानो उनकी आँखें मेरे ही इंतज़ार में बिछी हो। एक शिक्षक की कमी उनके जीवन में साफ झलक रही थी और उस कमी का मेरे द्वारा पूरा होने कि खुशी,काली अंधेरी रात में उम्मीद की किरण मिलने के समान थी । सच ही है, हम आधुनिकीकरण के दौर में कितने ही आगे बढ़ जाएं शिक्षक का विकल्प नहीं बना सकते है। अपने कार्यों का निर्वहन करते हुए मुझे यह अनुभूति हुई की यहाँ आदिवासी समाज में प्रतिभा कि कोई कमी नहीं है, ज़रूरत है तो बस हमारे साथ कि जो इनका हाथ पकड़कर इन्हें मुख्य धारा से जोड़े। पहनने के लिये हमारे जैसे कपड़े न हो, खानों में शहरी झलकियाँ न हो, रहने के लिये पक्के घर न हो परन्तु जोश, उत्साह और कुछ करके दिखाने का जज़्बा इनमें हमसे कई ज्यादा है। बहुत ही मिलनसार और आत्मीयता की भावना जो मुझे इनके बीच रहकर अनुभव हुआ, वह शहर की भाग दौड़ भरी जिंदगी में कहीं गुम-सी हो गयी है।

माँ दंतेश्वरी माई जी का मंदिर जो बस्तर संभाग के दंतेवाड़ा क्षेत्र में स्थित है जिसे बस्तर की भी कुलदेवी कहा जता है, के पावन धाम में आने के बाद मेरे मन में असीम शांति और सकरात्मक उर्जा का संचार हुआ। इन्हीं दिनों मेरी कक्षा के एक विद्यार्थी का चयन सरकार द्वारा चलाए जा रहे एकलव्य स्कूल में हुआ। वह दौड़ते हुए आया, और मेरे चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेते हुए बड़े उत्साह के साथ कहा " मैम मेरा चयन एकलव्य में हो गया, अब मैं फौजी बन जाऊँगा"। उसकी सफलता की पहली मंजिल में उसका साथ दे के और उसे इतना खुश होकर आगे बढ़ते देख, जिस खुशी और सुख की अनुभूति हुई उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। उस दिन यह एहसास हुआ कि यही जीवन है, और शायद यही वह सुख है जिसे पाने के लिए मनुष्य कितने जतन करता है। जीवन में कुछ बने या ना बने किसी के जीवन के दीपक जरूर बने, यह हमारे मनुष्य जीवन को सार्थक बनाता है।

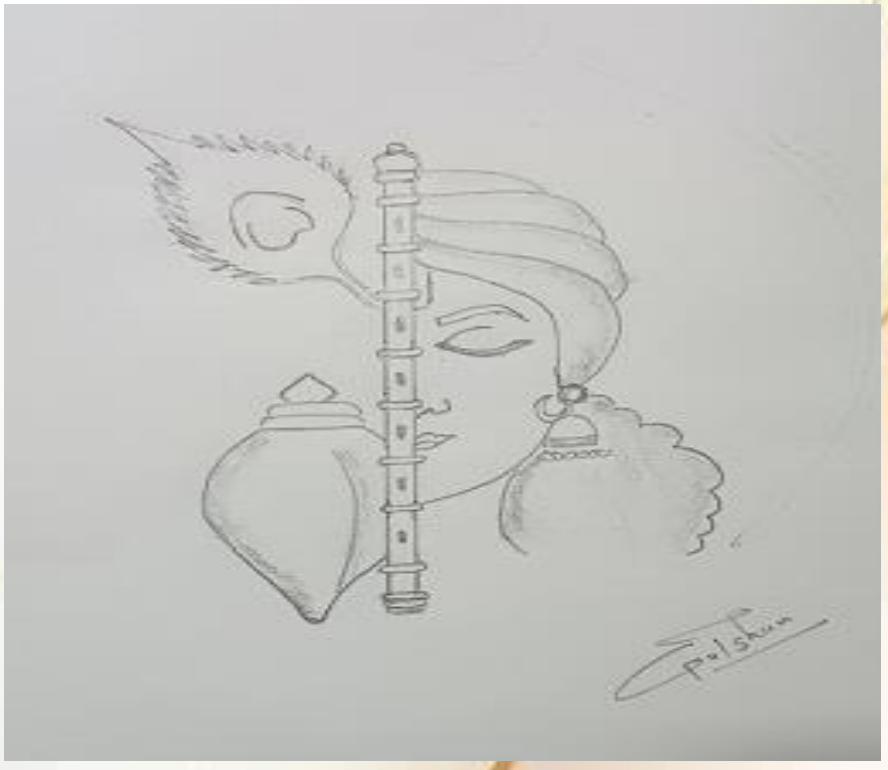

गुलशन कुमार, आशुलिपिक द्वारा बनाया गया पेंसिल आर्ट

गुलशन कुमार
आशुलिपिक ग्रे.I

पकड़ौआ विवाह

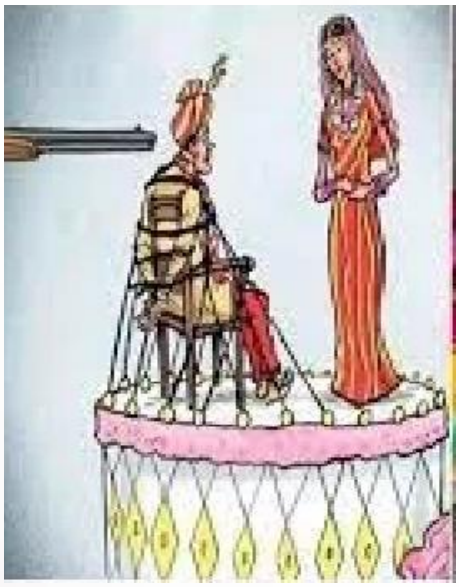

विवाह का अर्थ होता है- भावनात्मक, सामाजिक सहयोग, परिवार निर्माण तथा वित्तीय लाभ प्रदान करना। यह व्यक्तियों और परिवारों की स्थिरता और सुरक्षा में भी योगदान देता है । लेकिन आज मैं एक ऐसे विवाह के बारे में बताने जा रहा हूँ जो बिहार राज्य से संबंधित है जिसे "पकड़ौआ विवाह" या "जबरिया शादी" के नाम से जाना जाता है । इसमें लड़का और लड़की की शादी उनकी मर्ज़ी के बगैर बलपूर्वक करवा दी जाती है । पकड़ौआ "अंगिका" बोली है जिसे बिहार के मुंगेर, भागलपुर, बांका, जमुई, खगड़िया और बेगूसराय क्षेत्रों में बोली जाती है।

इसकी शुरुआत 1970-80 के दशक में हुई जब जयप्रकाश नारायण ने बिहार में सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान किया जिसमें उन्होंने "जात-पात तोड़ दो, तिलक-दहेज छोड़ दो, समाज के प्रवाह को नई दिशा में मोड़ दो" का नारा दिया था, जिससे समाज के प्रवाह को नई दिशा तो मिली, किन्तु बिहार से दहेज नहीं छूटा, लेकिन इससे एक कुप्रथा ने जन्म जरूर ले लिया - पकड़ौआ विवाह ।

इस प्रकार के विवाह की शुरुआत कहाँ से और कब से हुई यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता, परंतु इसका केंद्र बिन्दु बिहार राज्य का बेगूसराय जिला ही रहा है जहां से पकड़ौआ विवाह के सबसे अधिक मामले सामने आए हैं , साथ ही आसपास के जिले भी इससे अछूते नहीं रहे।

इसमें ऐसे परिवार के लड़कों को निशाना बनाया जाता है , जो सम्पन्न परिवार से हों अथवा सरकारी नौकरी-पेशा में हों, या फिर वे अच्छा कमाते हों। यह पता चलते ही कुछ अनजान लोगों का समूह उस व्यक्ति का अपहरण करके उसकी इच्छा जाने बिना ही उसकी शादी करवा देते है । इस दौरान यदि वह व्यक्ति विरोध करने की कोशिश करता है तो उसके साथ मारपीट भी की जाती है । उसे बंदूक दिखा कर डराया-धमकाया जाता है और फिर बंदूक

की नोक पर उस व्यक्ति की शादी ऐसी लड़की से करवा दी जाती है जिससे वह बिल्कुल अनजान हो और जिसे उसने पहले कभी देखा भी नहीं है।

देखा जाए तो इस कुप्रथा का सबसे बड़ा कारण एक दूसरी कुप्रथा है "दहेज", हालाँकि साल 1961 में दहेज कानून बनाया गया जिसमे दहेज लेना और दहेज देना दोनों अपराध की श्रेणी में रखा गया। लेकिन 1970 से 80 के दशक में बिहार के कई हिस्सों से दहेज की बढ़ती मांग के कारण पकड़ौआ शादी के मामले सामने आने लगे। इस प्रकार की शादी का एक और कारण लड़कियों का अशिक्षित होना भी माना जा सकता है। हालाँकि सोचने वाली बात यह भी है की खबरों में सिर्फ लड़कों की ही दशा दिखाई जाती है, किसी भी घटना में इस बात का जिक्र नहीं होता कि उस लड़की का क्या होता है। आखिर उस लड़की की शादी भी तो ज़बरन कराई जाती है ।

असल में हमारे समाज में चल रही इस रुढ़िवादी परंपरा की जड़ों की पकड़ को कमज़ोर करना आसान नहीं है । कहने को तो दहेज लेना और देना गैर-कानूनी है लेकिन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में आज भी समाज में इसका चलन है । ठीक उसी प्रकार पकड़ौआ शादी में भी कहने मात्र के लिए पाबंदी लगाई गई है, किन्तु आज भी ऐसी घटनाएं होती रहती है ।

जिस तरह से पुराने जमाने से लड़कियों को पराया धन समझा जाता है, ऐसे कई मामलों में देखा गया है की परिवार जन भी लड़की की जैसे-तैसे शादी कराकर उस से छुटकारा पाना चाहते है, लेकिन उनके भविष्य का क्या होगा इसके बारे में कोई नहीं सोचता। देखा जाए तो पकड़ौआ विवाह से लड़कियों को भी नुकसान होता है। ऐसी अनचाही और ज़बरन की शादी के बाद लड़का और लड़की दोनों ही मानसिक रूप से परेशान हो जाते है। ज़बरन शादी कराना हमारे संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन जीने का अधिकार और निजी स्वतंत्रता का उल्लंघन है । एक और बात यह भी है की किसी भी प्रकार की कुप्रथा का असर समाज के लिए भयानक ही होता है । हमारे समाज में केवल ऐसे रीति-रिवाजों का चलन है जिसके दुष्प्रभाव अक्सर समाज में ही देखने को मिलते है । हालांकि दहेज के खिलाफ होने का नाम लेकर इस तरह से हों रही पकड़ौआ विवाह का दंश सबसे अधिक लड़का और लड़की को ही झेलना पड़ता है । ऐसे में इस प्रकार की कुप्रथाओं पर रोक लगाने के लिए राज्य सरकार और केंद्र सरकार को मिलकर कोई ठोस कदम उठाने की जरूरत है, ताकि इस प्रकार की कुप्रथा से समाज को नुकसान न पहुचें।

बहिन आज फूली समाती न मन में।
तड़ित् आज फूली समाती न घन में॥
घटा है न फूली समाती गगन में।
लता आज फूली समाती न वन में॥
कहीं राखियाँ हैं चमक है कहीं पर,
कहीं बूँद है, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनों,
बधाई उन्हें जिनको भाई मिले हैं॥
मैं हूँ बहिन किंतु भाई नहीं है।
है राखी सजी पर कलाई नहीं है॥
है भादों, घटा किंतु छाई नहीं है।
नहीं है ख़ुशी पर रुलाई नहीं है॥
मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर
के तैयार हो जेलख़ाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है॥
मुझे गर्व है किंतु राखी है सूनी
वह होता, ख़ुशी तो क्या होती न दूनी?
हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी।
है घायल हृदय, दर्द उठता है ख़ूनी॥
है आती मुझे याद चित्तौरगढ़ की,
धधकती है दिल में वह जौहर की ज्वाला।
है माता-बहिन रोके उसको बुझातीं,
कहो भाई तुमको भी है कुछ कसाला?
है, तो बढ़े हाथ, राखी पड़ी है।
रेशम-सी कोमल नहीं यह कड़ी है॥
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है।
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है॥
आते हो भाई? पुनः पूछती हूँ–
कि माता के बंधन की है लाज तुमको?
–तो बंदी बनो, देखो बंधन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको॥
सुभद्रा कुमारी चौहान। ।